सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 18/-
वार्षिक	₹ 200/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 युएस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

अप्रैल, 2017 वर्ष 16 अंक 02

हम्द

बड़ी शान वाला हमारा खुदा है
नही उस का सानी कोई दूसरा है
उसी ने किया ख़ल्क, अर्ज़ो समां को
उसी ने सितारों को पैदा किया है
उसी ने किया ख़ल्क शम्सो क़मर को
मुनव्वर भी उन को उसी ने किया है
समन्दर पहाड़ और दरया ज़मीं पर
उसी ने तो इन सब को पैदा किया है
बग़ीचे उगाए अनोखे फ़लों के
तो ग़ल्ला उसी ने ही पैदा किया है
उसी ने किया ख़ल्क़ इन्सान व जिन को
ईबादत का उन को मुकल्लफ़ किया है
वह ख़ालिक़ है, राज़िक़ है माबूद यकता
नही कोई माबूद उसके सिवा है

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल हयी हसनी नदवी	03
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	05
ग्रामीण समाज और विकास	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	07
नमाज़ में अल्लाह के रसूल सल्ल0	ह0 मौ0सै0 अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0	10
ऐ उम्मते मुस्लिमा सावधान!	ह0 मौ0 बिलाल अब्दुल हयी हसनी नदवी	13
बच्चों की शिक्षा दीक्षा	मुहम्मद नय्यर रब्बानी	17
रास्ते बन्द हैं सब	मौलाना ख़ालिद सैफुल्लाह रहमानी	18
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	22
पहरेदारी	मौलाना नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी	25
कोशिश किये जाओ (पद्य)	इदारा	27
शिक्षा एवं संस्कृति के प्रसार	डॉ0 रिजवान अहमद	28
धर्म की मौलिकता	इं0 जावेद इकबाल	32
महदवी फिरके से सावधान	इदारा	33
आमला या आँवला	राशिदा नूरी	36
सिपाही का बेटा	डॉ0 हैदर अली खाँ	38
नबी पे रहमत (पद्य)	इदारा	39
उर्दू सीखिए	इदारा	40

क़ुआन की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-निसाः

अनुवाद- *अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत ही दयालू है।*

ऐ लोगो! अपने रब से डरो जिसने तुम को एक अकेली जान से पैदा किया और उससे उसका जोड़ा पैदा किया और उन दोनों से बहुत से मर्द और औरतें (दुन्या में) फैला दिये[1], और उस अल्लाह का लिहाज करते रहो जिसके वास्ते से तुम एक दूसरे से मांगते हो, और रिश्ते—नातों का ख़्याल रखो, बेशक अल्लाह तुम्हारी निगरानी करने वाला है(1) और अनाथों का माल उनके हवाले कर दो और बुरे माल को अच्छे माल से बदल मत लो और उनके माल को अपने माल में मिला कर मत खाओ निश्चित ही यह बड़ा पाप है[2](2) और अगर तुम्हें अनाथ लड़कियों के बारे में अन्याय का डर हो तो जो औरतें पसंद आयें[3] उनमें दो और तीन और चार तक से निकाह कर सकते हो[4] और अगर तुम्हें डर हो कि तुम बराबरी न कर सको गे तो एक ही पर या (लौंडियों) पर संतोष करो जो तुम्हारी मिल्कियत में हों, इसमें लगता है कि तुम अन्याय से बच जाओगे(3) और औरतों को खुशी खुशी उनका महेर दे दिया करो और अगर वे तुम्हारे लिए खुशी से कुछ छोड़ दें तो उसे अच्छा समझ कर शौक से खाओ[5](4) और ना समझों को अपना वह माल हवाले मत कर दो जिनको अल्लाह ने तुम्हारे लिए ज़िन्दगी की पूंजी बनाया है और उनको उसमें से खिलाते और पहनाते रहो और उन से भलाई की बात कहते रहो[6](5) और अनाथों की देख भाल करो यहां तक कि वे निकाह की आयु को पहुंच जाएं फिर अगर तुम उनमें बुद्धि की परिपक्वता महसूस कर लो तो उनका माल उनके हवाले कर दो और इस डर से कि वे बड़े न हो जाएं तुम उस को फ़िज़ूल खर्ची के साथ जल्दी—जल्दी उड़ा मत डालो और जो धनी हों तो उसको पूरी तरह बचना चाहिए और जो निर्धन हों तो वह नियमानुसार खा सकता है[7] फिर जब तुम उनके माल को उनके हवाले करो तो उन पर गवाह बना लो और अल्लाह हिसाब लेने वाला काफ़ी है[8](6) माँ—बाप और निकट संबंधी जो कुछ भी छोड़ जाएं उसमें मर्दों के लिए भी हिस्सा है और माँ—बाप और निकट संबंधी जो छोड़ जाएं उसमें औरतों के लिए भी हिस्सा है चाहे वह कम हो या अधिक, हिस्सा निर्धारित है[9](7) और जब बँटवारे के समय संबंधी, अनाथ और निर्धन आ जाएं तो उनको भी उसमें से कुछ दे दो और उनसे अच्छी बात कहो[10](8) और ऐसे लोगों

को डरना चाहिए कि अगर वे खुद अपने पीछे कमज़ोर संतान छोड़ कर जाएं तो उन्हें उनकी कैसी चिंता रहे तो उन्हें चाहिए कि वे अल्लाह से डरें और ठीक–ठीक बात कहें(9) बेशक जो लोग अनाथों का माल ना हक़ खाते हैं वे दोज़ख से अपना पेट भरते हैं और वे जल्द ही भड़कती हुई आग में जा पड़ेंगे[11](10)।

तफ़्सीर (व्याख्या):–

इस सूरह में पारिवारिक नियमों और समाज सुधार का उल्लेख है और महिलाओं के विषय में कुछ विस्तृत आदेश दिए गए हैं, इसलिए इसका नाम सूरह निसा (महिला) है।

1. आदम को पैदा किया फिर उनकी पस्ली से हव्वा को बनाया फिर उन दोनों के मिलने से दुन्या को महिला–पुरुष से आबाद कर दिया तो जो अल्लाह सारे इंसानों का सृष्टा है उसका लिहाज़ रखो जिसके नाम पर तुम लेन–देन करते हो, बातचीत पक्की करने के लिए क़समें खाते हो और रिश्तेदारों का भी ख्याल रखो कि सब ही आदम की संतान हैं।

2. अनाथ के माल में साझीदारी तो जाएज़ है मगर सावधानी के साथ अगर असावधानी हुई तो हराम माल शामिल हो गया, नापाक–पाक से मिल गया।

3. अनाथ लड़कियां किफ़ालत (भरण–पोषण) में हों तो उनकी सुन्दरता या धन दौलत के कारण उनको मामूली महेर दे कर यह सोच कर कि और कौन पूछने वाला है, निकाह कर लेना अत्याचार है।

4. जाहिलियत के ज़माने में पत्नियों की कोई संख्या निर्धारित नहीं थी एक व्यक्ति दस–दस, बीस–बीस पत्नियां रखता था, इस आयत में इसकी सीमा निर्धारित कर दी गई और वह भी इस शर्त के साथ कि इंसान सबके साथ बराबरी का बर्ताव करे और ऐसा न कर सकता हो तो एक शादी से ज़ियादा की अनुमति नहीं।

5. औरतों के महेर हड़प कर जाने का रिवाज जाहिलियत के ज़माने में भी था और आज भी है इससे सख़्ती के साथ रोका जा रहा है।

6. यानी अनाथ लड़का कमअक़्ल है तो उसका माल उसके हवाले न करो उसका खर्च उसमें से चलाओ जब समझदार बालिग हो जाये तो माल उसके हवाले कर दो लेकिन हमेशा भली बात कहते रहो यानी यह माल तुम्हारा ही है हम तुम्हारी भलाई पर खर्च करते हैं।

7. अनाथों के अभिभावक को क्योंकि बड़ी ज़िम्मेदारियां निभानी पड़ती हैं इसलिए अगर वह निर्धन हों तो ज़रूरत भर उसमें से खुद भी इस्तेमाल कर सकता है लेकिन अगर धनी हो तो उसके लिए उसमें से खर्च कर लेना ठीक नहीं है।

8. यानी आज़मा कर देख लो कि वे मामलात में परिपक्व हो गए हैं तो माल हवाले कर दो, और उससे पहले इस डर से कि अब माल हवाले करने का समय आ गया है उसको जल्दी जल्दी ख़र्च मत कर डालो।

9. जाहिली युग में रिवाज था कि मृतक संपत्ति (मीरास) केवल व्यस्क पुरुषों को मिलती थी महिलाएं और बच्चे वंचित रहते थे, इसको ग़लत बताया

शेष पृष्ठ....6 पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

मुसलमान को गाली देना गुनाह है:-

हजरत इब्ने मसऊद रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मुसलमान को गाली देना गुनाह है और उस का कत्ल करना कुर्फ है (अर्थात कुफ्र तक पहुंचाने वाला है)।

(बुखारी—मुस्लिम)

दोष मढ़ने का वबाल:-

हज़रत अबू ज़र रज़ि0 से रिवायत है कि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि आप फरमाते थे कि कोई किसी को फिस्क या कुर्फ की तोहमत न लगाये, इस लिए कि जिस व्यक्ति पर तोहमत लगाई है, अगर वह काफिर व फासिक नहीं है तो यह बात तोहमत लगाने वाले ही पर पलट आयेगी। (बुखारी)

शुरू करने वाला जिम्मेदार है:-

हजरत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया दो व्यक्ति आपस में एक दूसरे को गाली देते हैं तो जब तक मजलूम (पीड़ित) की गाली न बढ़ जाये उस वक्त तक दोनों का गुनाह शुरु करने वाले पर है। (बुखारी)

बद दुआ करने की मुमानिअत:-

हजरत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि एक शराबी हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में लाया गया, हुजूर सल्ल0 ने उसको मारने का आदेश दिया फिर तो कोई हाथ से मारने लगा कोई जूतों से, कोई कपड़ों से, जब वह लौट कर चला तो किसी ने कहा अल्लाह तुझ को रुसवा करे, आप सल्ल0 ने फरमाया शैतान की मदद मत करो। (बुखारी)

मतलब यह कि इस प्रकार की दुआ से शैतान की मदद होती है इस लिए कि अगर अल्लाह उस को ज़लील व रुसवा करेगा तो शैतान खुश होगा और उस की मदद होगी।

दोष मढ़ने की सजा कियामत में :-

हजरत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है आप फरमाते थे जो अपने लौंडी या गुलाम पर बदकारी की तोहमत लगायेगा तो कयामत में उस पर हद कायम की जायेगी अर्थात दण्डित किया जायेगा। सिवाय इस के कि जैसा उस ने कहा है वैसा ही हो। (बुखारी—मुस्लिम)

मृतकों को नाहक बुरा कहने की निषेद्धता:-

हजरत आयशा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया मृतकों को गाली न दो, इसलिए कि जो कुछ नेक यानी अच्छा या बुरा अमल कर चुके हैं उस को पहुंच चुके, अर्थात उस की सजा या इनआम मिल चुका।

मुसलमानों की तारीफ़:-

हज़रत **अब्दुल्लाह बिन** अम्र बिन आस **रज़ि0** से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** सल्लल्लाहु **अलैहि व सल्लम** ने फरमाया मुसलमान वह है जिस की ज़बान और हाथ से मुसलमान सुरक्षित रहें और मुहाजिर वह है कि उस काम को छोड़ दे जिस से अल्लाह तआला ने मना फरमाया है।

(बुखारी–मुस्लिम)

जो स्वयं के लिए पसंद करें वही दूसरों के लिए:-

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो व्यक्ति आग से बचना चाहे और जन्नत का तलबगार हो तो उस पर लाजिम है कि उस की मौत इस हालत में आये कि वह अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखता हो और लोगों के साथ वही व्यवहार करे जो अपने लिए पसंद करता है। (मुस्लिम)

तीन दिन से ज़ियादा बात चीत बन्द रखना जायज़ नहीं:- हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह **सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया आपस में बुग्ज़ व दुश्मनी न रखो, आपस में ईर्ष्या न करो, एक दूसरे से तअल्लुकात खत्म न करो, आपस में रिश्तों को खत्म न करो, एक के सौदे पर दूसरा सौदा न करे, और आपस में अल्लाह के बंदे भाई भाई बन कर रहो और किसी मुसलमान पर जायज़ नहीं कि वह अपने मुसलमान भाई से तीन दिन से जियादा बोलना छोड़ दे।**

(बुखारी–मुस्लिम)

दुश्मनी रखने वालों की महरूमी:-

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया सोमवार व जुमेरात के दिन जन्नत के दरवाजे खोल दिये जाते हैं और अल्लाह तआला हर उस बंदे की माफी फरमाता है जो अल्लाह के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराता, लेकिन उन दो आदमियों के बारे में जिन की आपस में रंजिश हो फरिश्तों से फरमाता है इन को उस वक्त तक मोहलत दो कि यह आपस में सुलह कर लें। (मुस्लिम)

और एक रिवायत में है कि सोमवार और जुमेरात के दिन हर एक के आमाल पेश किये जाते हैं।

❖❖❖

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

कुर्आन की शिक्षा.....

जा रहा है आगे हिस्सों का विवरण भी दिया जायेगा।

10. यह काम मुस्तहब है कि जो लोग आ गए हों थोड़ा बहुत उनको खिला पिला दिया जाए और वे वंचित न रहें चाहे मीरास में उनका हिस्सा न हो और अगर वह माल अनाथों का है तो उन लोगों को समझा बुझा कर विदा कर दिया जए।

11. अपनी संतान की कैसी चिंता रहती है इसी तरह अनाथों की चिंता की जाए और जो अनाथों का माल नाहक खाते हैं वे आग से अपना पेट भरते हैं।

❖❖❖

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

ग्रामीण समाज और विकास

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी

ग्रामीण जनों के गुणः-

गांव के लोगों को विशेष विकार वाले अपनी बातों और अपने भाषणों द्वारा विकृत न कर दें तो वह बड़े सीधे सादे स्वभाव के होते हैं, उनमें परस्पर सहानुभूति की भावना प्राकृतिक होती है। उनमें परस्पर प्रेम होता है यदि छोटा गांव हुआ तो पूरा गांव हिन्दू हो या मुसलमान, हिन्दुओं में कोरी, पासी, रैदास हो या छत्री (ठाकुर) ब्रह्मण, अहीर, लाला, बनिया, लुहार, बढ़ई, मुसलमान में सय्यिद, शैख़, पठान, बेहना, नाई आदि सब रिश्तों से जुड़े होते हैं। किसी का कोई चाचा होता है तो कोई दादा, कोई बड़ा भाई है तो कोई छोटा भाई, इसी प्रकार कोई स्त्री किसी की चाची है तो कोई किसी की दादी, कोई किसी की दीदी है तो कोई किसी की भाभी, इन्हीं रिश्तों से गांव वाले एक दूसरे से सम्बन्धित रहते हैं। कोई बीमार हो तो लोग उसका हाल पूछने जाते हैं। जरूरत हुई तो उसको डॉक्टर के यहां ले जाते हैं, कोई घटना घट जाय कोई एक्सीडेन्ट हो जाय तो सब एक दूसरे के सहयोगी बन जाते हैं।

गांव के अधिकांश लोग खेती करते हैं या मजदूरी करते हैं, खेती में निराई के कामों में सब एक दूसरे की मदद करते हैं, अब तो छप्परों का रवाज बहुत कम हो गया है वरना पहले बड़े बड़े छप्पर तैयार होते तो आवाज दी जाती कि छप्पर उठाने चलो और लोग अपना निजी काम छोड़ कर छप्पर उठवाने अवश्य जाते, खुदा न करे कभी आग लग जाती तो देहातों में दमकल कहां? पूरे गांव के लोग कुएं से पानी निकाल निकाल कर आग बुझाते, आग लगने वाले घर को बचाने की पूरी मदद करते। परन्तु बड़े खेद के साथ यह भी स्वीकार करना पड़ता है कि कुछ साम्प्रदायिकता फैलाने वाले लीडरों ने उन का यह प्राकृतिक स्वभाव छीन लिया है, यद्यपि उनके दूसरे हितैषी जन उन को उन दोषी लीडरों से सावधान रहने और पारस्परिक एकता को बाक़ी रखने का प्रयास करते हैं परन्तु यह बात सत्य है कि मनुष्य बुराई को एक संकेत में ग्रहण कर लेता है जब कि भलाई की बात सौ बार कही जाती है तब कहीं वह उसकी ओर ध्यान देता है, मालिक ऐसे हितैषी जनों की मदद करे उन को अपना काम जारी रखना चाहिए अन्ततः उनके प्रयास सफलता लाएंगे।

ग्रामीण जनों की कुछ सुधार योग्य बातेंः-

यद्यपि छूत छात कानून द्वारा समाप्त करने का प्रयास किया गया है परन्तु यह गावों में अभी पूर्णतया विद्यमान है, यादव, (अहीर) ब्रह्मण, छत्री, लाला बनिया आदि जिन को गांव वाले ऊँची जात का समझते हैं उनके हाथ का पानी उनके घर का खाना सब हिन्दू खाते पीते हैं, परन्तु किसी

पासी, रैदास आदि जिन को गांव वाले नीच समझते हैं उन के हाथ का पानी उनका बनाया खाना आदि उक्त हिन्दू नहीं खाते पीते हैं। बड़े आश्चर्य की बात यह है कि अधिकांश गांव के मुसलमान भी उनके हाथ का खाना पानी नहीं खाते पीते हैं। यह बात इस्लामिक शिक्षाओं के विरुध है। गांव क्या शहर में भी हम यह विकार देखते हैं सफाई कर्मचारी आमतौर से एक विशेष जाति के होते हैं वह नहा धो कर साफ कपड़े पहन कर होटलों में खाने पीने जाएं तो उनको कोई पहचान नहीं पाता और पहचान भी पाए तो रोक नहीं सकता परन्तु जिस वक्त वह अपनी ड्यूटी पर होता है कोई उसको अपने गिलास में पानी नहीं देता, अपने बरतन में खाना नहीं खिलाता यहां तक कि मुसलमान भी ऐसा नहीं करता, यद्यपि इस्लाम में ऐसी कोई शिक्षा नहीं है।

इसी प्रकार गांव के पूरे समाज में मुसलमान के घर का खाना कोई हिन्दू नहीं खाता पीता यद्यपि सब आपस में मेल मिलाप और प्रेम रखते हैं।

मुसलमानों में भी यहां के हिन्दू भाइयों की संगत से यह बीमारी आ गई है और उनमें भी सय्यिद, शैख़, मुग़ल पठान आदि पेशे वाली बिरादरियों को नीच समझते हैं परन्तु दीन्दारों की कोशिशों से इसमें बहुत सुधार हुआ है। वह मस्जिदों में जब नमाज़ को जाते हैं तो उनमें कोई भेद भाव नहीं होता एक प्रसिद्ध शायर अल्लामा इकबाल रह0 का बहुत प्रसिद्ध शेर है:-

एक ही सफ़ में खड़े हो गये महमूद व आयाज़
न कोई बन्दा रहा न कोई बन्दा नवाज़

देहात और विकास:-

अख़बारों में पढ़ते हैं रेडियो में सुनते हैं कि केन्द्र तथा राज्य सब का ध्यान देहात के विकास पर है, और निःसंदेह दोनों ने इस पर योजनाओं द्वारा बहुत कुछ किया है मगर बुरा हो लालचियों का अभी तक देहात बहुत पीछे है।

हम अपने क्षेत्र रुदौली जनपद फैजाबाद को अपनी आंखों से देख रहे हैं, पिछली बार कई साल पहले जब समाज वादी पार्टी सत्ता में आई थी तो बड़े गांवों की सड़कों का किसी हद तक काम हुआ था शासन बदला तो उस सड़कों की ओर किसी ने ध्यान न दिया। रुदौली से नरौली, रुदौली से पूराएं, सरेठा आदि की सड़कों का बुरा हाल है सन् 2012 में समाजवादी पार्टी सत्ता में आई तो हमारे यहां भाजपा का विधायक सफल हुआ बड़े खेद की बात है कि पाँच वर्षों में विधायक महोदय ने एक बार भी इन गांवों की ओर झांक कर न देखा। इस लेख के छपने के समय तक सत्ता नई आ चुकी होगी। देखना है कि अब इन सड़कों पर हल्के के विधायक महोदय की गाड़ी कब गुज़रेगी।

अखबारों में पढ़ते हैं और रेडियों में सुनते हैं कि घर पक्का करने के लिए हुकूमत ने बैंकों के द्वार खोल दिये हैं। परन्तु ऐसा गरीब जो मज़दूरी कर के अपना और अपने बच्चों का पेट पालता है वह बैंक से

कर्ज़ लेगा तो उस की अदायगी की क्या सूरत होगी। इसी प्रकार जिस किसान के पास एक एकड़ ज़मीन भी नहीं है वह बैंक से क़र्ज़ ले तो कैसे अदा करे। बैंक से कर्ज़ ले कर तो सरकारी नौकर या बड़ा किसान या बड़ा कारोबारी ही मकान पक्का कर सकता है या कोई कारोबार कर सकता है। बेचारा निर्धन इस योजना से लाभ नहीं उठा सकता।

अखबारों में पढ़ते हैं और रेडियो में सुनते हैं कि हज़ारों गांव ऐसे हो चुके हैं कि उन के हर घर में शौचालय हैं नल हैं, अब उन गावों का कोई व्यक्ति खुले में शौच को नहीं जाता। परन्तु हम अपने देहात पर नज़र डालते हैं तो बीसों गावों के हर घर में शौचालय नहीं। यह बात बड़े आश्चर्य की भी है और प्रसन्नता की भी, कि हमारे प्रिय भाई बहनें सुब्ह अन्धेरे में शौच को जाते हैं या शाम का अंधेरा होने पर दिन के उजाले में उन को शौच जाने की आवश्यकता नहीं होती और कभी होती है तो कोई आड़ का स्थान ढून्ढ कर अपना काम पूर कर लेते हैं।

देहात के एक व्यक्ति से मेरी बात हुई उस का उल्लेख अनावश्यक न होगा। मैं ने कहा भाई आप लोग बाहर शौच कर के बीमारियां क्यों फैलाते हैं। उस ने मुझ से पूछा यह ईस्वी संवत का कौन सा सन् है? मैं ने कहा 2017, उस ने पूछा और बिक्रमी संवत का कौन सा वर्ष है मैं ने कहा 2073। उस ने कहा यह दो हज़ार वर्षों से लोग खुले में शौच करते आ रहे हैं वह तो सब बड़े बलवान स्वस्थ होते थे अब 2017 वाले खुले में शौच कर के क्यों बीमार होने लगे? मेरे पास उत्तर न था। उसने कहा हम लोग अपने खेतों में शौच को जाते हैं उस से हमारे खेत उपजाऊ होते हैं। हां शहर वाले तो रेलवे लाइन के किनारे बैठ कर शौच करते हैं उनके लिए अवश्य शौचालय होना चाहिए।

उस ने कहा, हमारे छोटे–छोटे घरों में शौचालय की जगह कहां है, फिर घर में शौचालय होगा तो क्या उस के सबब मक्खियां न बैठें गी। फिर उन शौचालयों की सफाई की समस्या अलग होगी हर घर में हैण्ड पाइप लगवाना आवश्यक होगा। हर घर का शौचालय क्या धरती के नीचे पानी के स्तर को दूषित न करेगा? मैं ने कहा हैण्ड पम्प की बोरिंग अधिक गहरी होगी तो दूषित पानी न निकलेगा, उस ने कहा हर घर में इण्डिया मार्का हैण्ड पाम्प लगवाना सरल काम नहीं है।

मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि मैं उस को कैसे समझाऊँ, मैंने कहा अच्छा तुम्ही बताओ इस का कैसे समाधान हो सकता है? आज कल तो खेत भी खाली नहीं रहते। और दिन में शौच की आवश्कयता हो तो वह कहां जाए?

उस ने कहा शासन को चाहिए कि गांव के बाहर जगह प्राप्त कर के पर्याप्त संख्या में शौचालय बनवा दे स्त्रियों के अलग पुरुषों के

शेष पृष्ठ ....16 पर

नमाज़ में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा

—हज़रत मौ0 सै0 अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0

—अनुवाद मु0 हसन अंसारी

तहारत (पाक साफ़ होना) और वज़ू के फ़वायद की तकमील और नमाज़ की तैयारी के लिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मिसवाक को मसनून फ़रमाया—

"अगर मुझे उम्मत पर मशक़्क़त का ख़्याल न होता तो लोगों को हर नमाज़ के वक़्त मिसवाक़ का हुक्म देता ।"

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो तकबीर तहरीमा "अल्लाहु अकबर" कहते और इससे पहले कुछ न कहते, और अल्लाहु अकबर कहने के साथ—साथ दोनों हाथ इस तरह उठाते कि उनका रुख़ क़िबला की तरफ़ हो और उंगलियां कुशादा हों, उठाते, फिर दाहिना हाथ बायें हाथ की हथेली की पुश्त पर रखते। फ़र्ज़ नमाज़ों में यह दुआ पढ़ते।

तर्जुमाः *"ऐ अल्लाह हम तेरी पाकी और हम्द बयान करते हैं, तेरा नाम मुबारक, और तेरी अज़मत बहुत बलन्द है, और तेरे अलावा कोई माबूद नहीं।"*

नवाफिल और तहज्जुद में मुख़तलिफ़ दुआयें आई हैं। जैसेः—

तर्जुमाः *"ऐ अल्लाह मुझ में और मेरी ख़ताओं में ऐसी दूरी कर दे जैसी पूरब और पश्चिम में तूने दूरी की है, ऐ अल्लाह मुझे गुनाहों और खताओं से ऐसा साफ़ और पाक कर दे जैसे मैल—कुचैल से सफेद कपड़ा साफ़ किया जाता है।"*

इसके बाद आप "अऊजू बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम, बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" पढ़ते। फिर सूरः फातेहा पढ़ते आपकी क़ेरअत साफ और एक—एक लफ़्ज़ अलग करके होती। हर आयत पर ठहरते और आख़िरी आयत को खींच कर पढ़ते। जब सूरः फातेहा ख़त्म होती तो "आमीन" कहते। आप के दो सकते होते थे, एक तो तकबीर और सूरः फातेहा के बीच, और दूसरा सूरः फातेहा के बाद या रुकूअ़ से पहले, सूरः फातेहा के बाद कोई दूसरी सूरः पढ़ते, कभी तवील सूरः होती और कभी सफर वग़ैरह की वजह से मुख़्तसर सूरः पढ़ते। अक्सर अवक़ात दरमियानी सूरतें पढ़ते जो न बहुत लम्बी होती और न बहुत छोटी फ़ज्र की नमाज़ में साठ से ले कर सौ आयतों तक मामूल था। इसमें सूरः हुज्रात से सूरः बुरूज तक की मुख़तलिफ सूरतें तिलावत फरमाते। सफर की हालत में फज्र में सूरः "इजाजुलज़िलत" और "कुल अऊजू बि रब्बिल फलक़" और कुल अऊजू बि रब्बिल नास" का पढ़ना भी आप से साबित है। जुमा के दिन फज्र में "अलिफ़ लाम मीम अल—सज्दा" और "सूरः दहर" पूरी पढ़ते। और बड़े मजमें में जैसे ईद और जुमा में सूरः "क़ाफ़" और "इकतरबत्तिसाअतु" और सब्बेहिस्मारब्बेका" और "हल अताका हदीसुल ग़ाशिया" पढ़ने का मामूल था।

जुहर में कभी–कभी किरअत तवील फ़रमाते। अस्र की नमाज़ की किरअत की आधी होती और अगर जुहर मुख़्तसर होती तो अस्र भी इसी के बराबर होती। मग़रिब में ज़ियादा तर "लमयकुन" से "वन्नास" तक की सूरतों में से किरअत फ़रमाते। इशा की नमजा में दरमियानी सूरतें पढ़ा करते थे और इसी को पसन्द फ़रमाते थे। हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि0 ने इशा में जब सूरः बक़रः पढ़ी तो आपने नकीर फ़रमाई, और फरमाया कि "ऐ मुआज़! क्या तुम लोगों को फ़ितना में मुब्तला करोगे?"

जुमा में "सूरः जुमा" और "सूरः मुनाफ़ेकून" पूरी पढ़ते या "सूरः सब्बिहिस्मारब्बेका" और "सूरः हलअताका" पढ़ते, जुमा व ईदैन के अलावा किसी नमाज़ के लिए आप कोई सूरः मुकर्रर नहीं फ़रमाते थे कि जिस के अलावा कोई और सूरः न पढ़ें। फ़ज्र की नमाज़ में पहली रकअत दूसरी रकअत के मुक़ाबले में तवील फ़रमाते और हर नमाज़ में पहली रकअत कुछ तवील होती। फ़ज्र की नमाज़ में दूसरी तमाम नमाज़ों से ज़ियादा तवील आप की किरअत होती, क्योंकि कुर्आन शरीफ़ में आता है:–

(सुबह के वक़्त कुर्आन पढ़ना–मोजिबे हुज़ूरे मलायका है) जब आप रुकू फ़रमाते तो अपने घुटनों पर हथेलियां इस तरह रखते जैसे कि घुटनों को पकड़े हुए हों और हाथ तान लेते और पहलुओं से अलग रखते। पीठ फैला लेते और बिल्कुल सीधी रखते, और कहते "सुब्हान रब्बिअल अज़ीम"। आदतन आप की तसबीहात की तादाद दस होती थी। इसी तरह सज्दा में भी दस बार "सुब्हान रब्बिअल आला" कहते। आप का आम मामूल नमाज़ में इतमिनान और तनासुब का ख़्याल रखने का था। रुकू से सर उठाते हुए कहते 'समीअल्लाहु लिमन हमिदा" रुकू से उठ कर क़ौमों में कमर बिल्कुल सीधी कर लेते, ऐसा ही दोनों सज्दों के दरमियान करते। जब क़ौमा में पूरी तरह खड़े हो जाते तो कहते "रब्बना व लकल हम्द" कभी इस पर इज़ाफ़ा भी फरमाते। फिर तकबीर अल्लाहु अकबर कहते हुए सज्दा में जाते और हाथों से पहले घुटने रखते और जब उठते तो घुटनों से पहले दोनों हाथ उठाते और सज्दा पेशानी व नाक दोनों पर करते, पेशानी व नाक दोनों को अच्छी तरह ज़मीन पर रखते और पहलुओं से हाथों को जुदा रखते और उनको इस तरह कुशादा कर लेते कि बग़ल की सफ़ेदी नज़र आती और हाथ कन्धों और कानों के सामने रखते, सज्दा पूरे इतमिनान के साथ करते और पैर की उंगलियों को क़िबला रुख़ रखते और कहते "सुबहान रब्बिअल आला" कभी इस पर इज़ाफ़ा भी फरमाते। और नफ़िल नमाज़ों में सज्दा की हालत में कसरत से दुआ करते, फिर अल्लाहु अकबर कहते हुए सर उठाते और हाथों को अपनी रानों पर रख लेते फिर कहते "अल्लाहुम्मग़फ़िरली, वरहमनी, वहदिनी वरज़ुक़नी"

(ऐ अल्लाह मेरी मग़फिरत फ़रमा, मुझ पर रहम फ़रमा, मेरी दिलबस्तगी फ़रमा, मुझे हिदायत नसीब फ़रमा और मुझे रिज़्क़ अता फरमा) फिर पैरों के पंजों घुटनों और रानों पर टेक लेते हुए उठ जाते। जब खड़े होते तो बिना ठहरे हुए क़ेरअत शुरु फ़रमा देते और पहली रकअत जैसी दूसरी रकअत भी पढ़ते फिर जब तशाहुद के लिए बैठते तो बायां हाथ बायें रान और दाहिना हाथ दायें रान पर रखते और दायें हाथ की शहादत वाली उंगली से इशारा फ़रमाते और बैठने की हालत में तशाहुद पढ़ते और सहाबाक्राम को इसी तरह तशाहुद पढ़ने की तालीम देते।

"अदब व ताज़ीम और इज़हारे नेयाज़ के सारे कल्मे अल्लाह ही के लिए हैं, और तमाम इबादात और तमाम सदक़ात अल्लाह ही के वास्ते हैं। (और मैं इन सब का नज़राना अल्लाह के हुजूर में पेश करता हूं) तुम पर सलाम हो ऐ नबी और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें, सलाम हो हम पर, और अल्लाह के सब नेक बन्दों पर, मैं शहादत देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत और बन्दगी के लायक़ नहीं, और मैं इसकी भी शहादत देता हूं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके बन्दे और पैग़म्बर हैं।"

इस तशाहुद में तख़फीफ़ से काम लेते। किसी रवायत में यह नहीं आया कि आप पहले तशाहुद में दरूदशरीफ़ पढ़तें हों। या अज़ाबे क़ब्र, अज़ाबे जहन्नम, मौत व हयात के फितना और दज्जाल मसीह के फ़ितना से पनाह की दुआ मांगते हों।

फिर पंजों के बल घुटनों और रानों पर टेक लेते हुए खड़े हो जाते जैसी पहली रकअत के बाद खड़े हुए थे, और बाक़ी रकअतें पहले की तरह पढ़ते, फिर जब आख़री रकअत होती जिस में सलाम फेरना है, तो तशाहुद के लिए बैठते और पहले वही पहले वाला तशाहुद पढ़ते। तशाहुद के बाद दरूद शरीफ़ पढ़ते फिर दुआ करते।

"ऐ अल्लाह मैं अज़ाबे कब्र से आपकी पनाह चाहता हूं, और दज्जाल के फितना से आपकी पनाह चाहता हूं, और ज़िन्दगी और मौत के फितना से आपकी पनाह चाहता हूं, और गुनाहों और क़र्ज़ के बोझ से आप की पनाह चाहता हूं।

"ऐ अल्लाह मैंने अपने नफ़्स पर बहुत जुल्म किया, और गुनाह सिर्फ आप ही माफ़ फ़रमाने वाले हैं, तो मुझे अपनी ख़ास मग़फ़िरत नसीब फरमाइये, और रहम फरमाइये, आप बहुत ही मग़फ़िरत फरमाने वाले, और बड़े मेहरबान हैं।"

इन के इलावा भी दुआयें साबित हैं। फिर दाहिनी तरफ़ सलाम फेरते और कहते "अस्सलामु अलैकुम व रहमत उल्ला" और इसी तरह बायें तरफ़ सलाम फ़ेरते। फिर दाहिनी या बायें जानिब रुख़ करके बैठ जाते, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 से रिवायत है, कि मैं अल्लाह के रसूल सल्ल0 की नमाज़ के ख़त्म का "अल्लाहु अकबर" की आवाज़ से पता चला लेता था। आप सलाम फेरने

शेष पृष्ठ ....35 पर

ऐ उम्मते मुस्लिमा सावधान!

—हजरत मौ0 बिलाल अब्दुल हयी हसनी नदवी

—हिन्दी इम्ला हुसैन अहमद

जिनके सामने संसार का इतिहास है वह जानते हैं कि यह संसार एक जैसा कभी नहीं रहा इस में हजारों परिवर्तन हुए उन्नति तथा पतन के काल आए इन्सानीयत कभी अपने उत्थान पर रही तो कभी हिंसकता की सारी सीमाएं पार कर गई। विश्व इतिहास के पृष्ठ जिस प्रकार मानवता तथा न्याय की घटनाओं से सुसज्जित हैं उसी प्रकार अत्याचार तथा भ्रष्टाचार की घटनाओं से लज्जित भी हैं। यह सब कुछ हुआ और कियामत तक होता रहेगा। न्याय तथा अत्याचार और सत्य तथा असत्य की लड़ाई हमेशा से रही है और हमेशा रहेगी यह लड़ाई अन्दर भी जारी है और बाहर भी अगर इस लड़ाई के वास्तविक कारणों को समझा जा सके तो ज्ञात यह होगा कि यह बाहर की लड़ाई अन्दर के वैमनस्य के परिणाम में है यहां बात केवल उन लड़ाइयों की नहीं है वास्तव में बात यह है कि सत्य तथा न्याय का बोल बाला कैसे हो? भटके मानव को मानवता के मार्ग पर कैसे लाया जाए? उसके लिए यदि पथ प्रदर्शन मिल सकता है तो वह केवल और केवल आकाशीय निर्देशों में, हज़रत आदम अलै0 आस्मान से ज़मीन पर उतारे गये और इस निर्देश के साथ उतारे गये कि इस ज़मीन पर जिस को अल्लाह तआला ने आदम अलै0 की सन्तान के लिए संवारा है उस जमीन पर आदम अलै0 की सन्तान बिगाड़ न पैदा करे अत्याचार तथा अन्याय न पैदा करे और आस्मानी शिक्षाओं के अनुकूल जीवन बिताये वह शिक्षाएं जो हज़रत आदम अलै0 ले कर आए फिर जब जब मनुष्यों ने उन आकाशीय (आस्मानी) निर्देशों को भुलाया तो अल्लाह तआला ने इन्हीं मनुष्यों में से अपने प्रिय बन्दों का चयन किया उच्च मानव आचार का आदर्श बना कर उन पर "वही" (अपनी वाणी) भेजी और भटके हुए मानव को उन के द्वारा सत्य मार्ग प्रदान किया सैकड़ों हजारों साल यही सिलसिला चलता रहा, परन्तु जब अत्याचार और अन्याय ने सारी सीमाएं पार कर लीं, सासानी और बाज़नतीनी शासनों में मानव जाति के साथ पशुओं जैसा व्यवहार होने लगा जिस का बड़ा क्रूर अत्याचारी उदाहरण इतिहासकारों ने यह लिखा है कि रात्रि के भोज में प्रकाश के लिए किसी दास के कपड़ों में आग लगा देते और उसी प्रकाश में भोज खाते फिर क्रूरता यहां तक पहुंच गई कि जब वह दास अंतिम सांसें लेने लगता तो उस के कष्ट के दृष्य को देख कर आनन्द लेने के लिए उस पर टूट पड़ते।

अरबों में कुछ बड़े अच्छे गुण थे परन्तु उनके बाज लोगों की दुष्टता का अनुमान केवल इस घटना से किया जा सकता है जिस को सुन कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं कि एक सहाबी रज़ि0 बैठे बैठे अचानक बेहोश हो गये, होश आने पर लोगों ने कारण पूछा तो उन्होंने

इस्लाम से पहले की अपनी एक घटना रो रो कर इस प्रकार सुनाई मेरे घर में बेटी ने जन्म लिया जो मेरे लिए किसी यातना से कम न थी किसी कारण मैंने उस को सहन कर लिया दो तीन वर्षों में वह मुझ से प्रेम करने लगी परन्तु शैतान ने अपना काम किया एक दिन मैं उस को चुपके से ले कर बाहर गया ताकि उस से छुट्टी प्राप्त कर लूं मैं ने एक गड्ढा खोदा और उस को उस में खड़ा किया और उस पर मिट्टी डालना आरम्भ किया वह पाप रहित उस को खेल समझ कर हंसती रही लेकिन जब गड्ढा पटने लगा तो उस को कष्ट पहुंचने लगा और वह रो रो कर दुहाई करने लगी मगर मैं निर्दयता से उस पर मिट्टी डालता रहा आज भी जब उस का ख्याल आ जाता है तो मैं अचेत होने लगता हूं।

इस अत्याचारी अंधेरी परिस्थिति में अन्तिम नबी का आगमन हुआ जिन के हृदय में प्रकाश था उन की आंखें खुल गईं और जो अंधेरे के प्रेमी हो चुके थे उन की आंखें चौंधियाने लगीं उन्होंने उस सत्य के प्रकाश को बुझा देना चाहा और जब यह न कर सके तो अपने आप को अंधेरियों में छुपाने लगे अपनी स्त्रियों तथा बच्चों को उस सत्य के प्रकाश से दूर रहने का निर्देश देने लगे परन्तु जिस पर नुबूवत का प्रकाश पड़ गया वह प्रकाशित हो गया।

हज़रत आदम अलै0 से ले कर हज़रत ईसा अलै0 तक अल्लाह के नबी आते रहे और अपने अपने काल में मानव जाति को सत्य मार्ग दिखाते रहे परन्तु समय बीतने पर उन के प्रकाश इतने मद्धिम हो गये कि मार्ग ओझल हो गए कौमें गिरती पड़ती मार्ग पर चलती रहीं जिधर जिस का रुख हो गया वह उस रुख पर बढ़ता गया और मंज़िल (अभीष्ट स्थान) से दूर होता गया परन्तु वह अपनी अंधेरियों में ऐसा खो गया कि उस को इस्लाम का प्रकाशित मार्ग दिखाई न दिया और अगर किसी ने उस का हाथ पकड़ कर इस्लाम का सत्य मार्ग दिखाना चाहा तो उस ने हाथ झटक दिया हां उन में बहुत से बुद्धिमान भी थे जिन को अपनी त्रुटि का आभास हो रहा था उन्होंने पथ प्रदर्शक को अपना कष्ट निवारक तथा हितैषी जाना और अपने अभीष्ट स्थान (मंज़िल) की ओर लौट आए।

आज दुन्या की कौमों का हाल पागल हाथियों जैसा है न उन को मार्ग का पता है न मंज़िल का और वह मूर्खता तथा अज्ञानता में ग्रस्त हैं उन को अपने भौतिक अनुभव तथा ज्ञान पर गर्व है वह वास्तविक अभीष्ट स्थान से बे खबर अपने को संसार का गुरु मानते हैं।

किसी बड़े फिलास्फर (दार्शनिक) को यह काम दिया गया कि वह रूह के बारे में अपनी तहकीक पेश करे अर्थात आत्मा के विषय में अपना अनुसंधान प्रस्तुत करे बेचारा बीस वर्षों तक सर खपाता रहा परिणाम शून्य था परन्तु अपनी मूर्खता छिपाने के लिए यह अनुसंधान प्रस्तुत कर दिया कि आत्मा शरीर से निकल

कर एक विशेष ग्रह में चली जाती है उस बेचारे से कोई पूछे कि वह ग्रह कहां है? आत्मा वहां जा कर क्या करती है? और यह आत्मा शरीर से निकलती क्यों है और उस का कोई समय नियुक्त क्यों नहीं है इन प्रश्नों पर उस की बुद्धि चकित है।

उत्तर अगर है तो यह है कि कुंजी तो अल्लाह के नबियों के पास है इन अज्ञानताओं के ताले तो अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खोले हैं। आत्मा के विषय में जब तक दुन्या अन्तिम नबी से ज्ञान न लेगी यूं ही भटकती और दूसरों को भटकाती रहे गी परन्तु सोते को जगाया जा सकता है लेकिन जो बन के सो रहा हो उसे कौन जगा सकता है?

अहले किताब का हाल यह है कि उन में बहुत से लोग ऐसे भी हैं कि वह अन्तिम नबी को वैसे ही पहचानते हैं जैसे अपनी संतान को बल्कि उस से भी अधिक परन्तु वह दृष्टा हो कर दृष्टि हीन हैं इस पर भी संसार को नेत्रहीन कर देना उन का मिशन है समस्त संसार के लिए वह हिंसक भेड़िये हैं यदि संसार ने उन से अपने बचाव का प्रबंध न किया तो वह मानवजाति को नष्ट कर के रख देंगे जैसे हिंसक भेड़िया भेड़ों और बकरियों के दल को नष्ट करता है।

ऐसी भयानक परिस्थिति में बड़ी सावधानी की आवश्यकता है उम्मते इस्लामिया ही नहीं अपितु पूरी मानवता को उन से सावधान रहने की आवश्यकता है और संसार को यह बताने की आवश्यकता है कि जिस प्रकार अब से 1437 वर्ष पूर्व अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मानवता की डूबती नाव को बचाया था आज भी उन्हीं की आकाशीय शिक्षाएं मानवता के विनाश को रोक सकती हैं मनुष्य यदि अपने भले के लिए आदर्श मार्ग खोजता है तो मानवजाति ही में खोजता है फिरिश्ते जो कर सकते हैं वह मनुष्य नहीं कर सकता किसी आदर्श मनुष्य के अनुकरण ही में मनुष्य, मनुष्य बनता है और मानव जाति के उत्तम आदर्श अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं उन्होंने स्वयं बताया कि "मेरे रब ने मुझे अदब (शिष्टता) सिखाया और खूब सिखाया शिक्षा दी और खूब दी" स्पष्ट घोषित कर दिया गया "तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल की जाते गिरामी में बेहतरीन नमूना मौजूद है"।

यह केवल इस उम्मत की विशेषता है और यह विशेषता अन्तिम नबी की देन है कि इस उम्मत ने अपने नबी के विषय में न कुछ बढ़ाया न घटाया न महब्बत में कोई कमी की न महब्बत में बढ़ा कर खुदा का बेटा बना दिया जैसा की दूसरी कौमों ने किया। ईसाईयों ने हज़रत ईसा अलै0 को खुदा का बेटा बताया और यहूदियों ने अपने एक नबी पर (जो स्वयं उनके मूल पुरुष थे) आरोप लगाये जो उनकी धार्मिक पुस्तकों में मौजूद हैं उम्मते मुहम्मदी अपने नबी के विषय में घटाने बढ़ाने से सुरक्षित रही यही संतुलन तथा

अनुकरण महब्बत की जान है जो भी इस वास्तविकता से अनभिज्ञ हुआ वह भटका वह भटकता चला गया और गैरों के मार्ग पर पड़ गया।

आज अन्तिम नबी की रिसालत के विषय में यह दो बातें बहुत ही महत्वपूर्ण हैं एक यह कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उन पर निछावर होने वाला प्रेम हो दूसरी यह कि उस प्रेम में आस्था का संतुलन हो। इस विषय में खुद नबी का आदेश है "मुझे वैसा न बढ़ाओं जैसा ईसाइयों ने मरयम के बेटे हज़रत ईसा को बढ़ाया मैं अल्लाह का बन्दा और रसूल हूं तो तुम मुझे अल्लाह का बन्दा और रसूल ही समझना"।

इस के साथ उम्मत की यह भी जिम्मेदारी है और उसके ईमान का हिस्सा है कि नबी से महब्बत उस का स्वभाव हो नबी के लिए अपना शरीर तथा अपनी आत्मा भेंट करने को तैयार रहे और हर उम्मती आप की प्रतिष्ठा के लिए यहां तक की आप की शिक्षाओं तथा निर्देशों की सुरक्षा के लिए व्याकुल और बेचैन रहे यह इस उम्मत की पहचान है और उम्मत की एकता का बहुत बड़ा साधन है।

पाश्यचात कौमों ने इस वास्तविकता को जान लिया है इस लिए आज उन की सब से बड़ी चेष्ठा यह है कि नबी से महब्बत की विशेषता उम्मत में कमज़ोर की जाए और मुसलमान पाश्यचात सभ्यता के अनुयायी बन कर नाम के मुसलमान रह जाएं परन्तु ऐ उम्मते मुस्लिमा सावधान।

❖❖❖

ग्रामीण समाज एवं .....

अलग और उन की सफाई की व्यवस्था करे और जब स्त्रियों या पुरुषों को शौचालय की खेतों में सुविधा न हो तो उन शौचालयों को काम में लाएं और यह प्रोपेगण्डा न किया जाय कि खुले में शौच करने से बीमारियां फैलती हैं। किसान अगर मौक़ा पाए तो अपने खेतों में शौच को जाए।

ऊपर जिस व्यक्ति से बातें हुई हैं, भले ही उस से कोई सहमत न हो परन्तु, उस की सभी बातों की अनदेखी भी नहीं की जा सकती, जो लोग देहात में रहते हैं उन को पता है कि कितने निर्धन ऐसे हैं कि जिन के घरों में न शौचालय की जगह है न हैण्ड पम्प की, फिर एक बड़ी समस्या यह है कि शौचालयों के मलमूत्र जिन टैंकों में एकत्र होते हैं वह जब भर जाएंगे तो उन की सफाई की क्या व्यवस्था होगी? फिर गावों में पानी की निकासी की भी बड़ी समस्या है। कितने गांव ऐसे हैं जहां इस समस्या के समाधान में गांव के प्रधान असमर्थ हैं यह समस्याएं तो शौचालयों की हुई दूसरी विकास की योजनाओं से भी गांव के निर्धन वंचित हैं उन के पास पशुपालन तथा मत्सपालन के लिए ज़मीन कहां? ऐसे निर्धनों के लिए यही उचित होगा कि उन के बच्चों को सरकार इतना शिक्षित तथा प्रशिक्षित कर दे कि वह सरकारी या प्राइवेट नौकरियां कर के अपना जीवन बिता सकें, सम्भव है कि उन में कोई किसी कला में निपुण हो कर बड़ा आदमी बन जाए परन्तु ऐसा यदा कदा ही होता है। ◆◆◆

बच्चों की शिक्षा दीक्षा में माँ का योगदान

—मुहम्मद नय्यर रब्बानी

—हिन्दी इम्ला हुसैन अहमद

प्रायः बच्चों के बचपन का समय अनुचित लाड प्यार और ला परवाही के भेंट हो जाता है फिर जब यही बच्चे बड़े हो जाते हैं तो माता पिता तथा समाज के लिए सिर दर्द बन जाते हैं समाज में जो विभिन्न प्रकार के विकार नज़र आते हैं जैसे दुर्व्यवस्था, दुर्व्यवहार, दुराचार तथा स्वार्थपरता आदि वह माता पिता की लापरवाही और बच्चों की शिक्षा दीक्षा के नियमों से अपरिचित होने के कारण होते हैं बच्चों में विद्रोह की भावना तथा अवज्ञापन अव्यस्क काल ही में जो नज़र आने लगती है वह उनके बचपन की अशुद्ध शिक्षा दीक्षा के कारण होती है यदि बच्चों के बचपन की अन्देखी कर दी जाए तो उन के अन्दर बुराइयों की नीव मां की गोद ही में पड़नी आरम्भ हो जाती है आज कल की परिस्थिति यह है कि इस समय कोई घर और कोई परिवार दावे से नहीं कह सकता है कि उसके बच्चे और बच्चियों का पालन पोषण और शिक्षा दीक्षा उचित ढंग से हो रही है इसी प्रकार कोई परिवार यह भी नहीं कह सकता है कि वह अपने अव्यस्क तथा व्यस्क लड़कों, लड़कियों की ओर से सन्तुष्ट है घर के शिक्षण तथा प्रशिक्षण के महत्व को कौन नकार सकता है वास्तव में बच्चों और बच्चियों की सामाजिक शिक्षा बचपन में घर ही से आरम्भ होती है वह अपने चारों ओर जो कुछ देखता है उस को अपनाने लगता है और वैसा ही करने लगता है और इस प्रकार वह बहुत कुछ सीखता है अतः बुद्धिमान माता पिता बच्चे के सामने अच्छी बातों, भले कामों तथा अच्छे आचरणों के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। साधारणतः कहा जाता है कि व्यक्तित्व की पूर्ति व्यस्क काल में होती है परन्तु उस की आधारशिला बचपन ही में पड़ती है और बचपन ही में जान लिया जाता है कि यह बच्चा या बच्ची किस दिशा में जा रहे हैं कहावत प्रसिद्ध है "होनहार बिरवा के चिकने पात" तात्पर्य यह है कि बच्चे या बच्ची को सामाजिक जीवन का पहला पाठ घर ही में मिलता है और मां की गोद में मिलता है उसके पश्चात घर का वातावरण बच्चे की शिक्षा की दूसरी संस्था होती है अर्थात मां की गोद और घर के वातावरण की शिक्षा का प्रभाव बच्चे पर जीवन के अन्त तक रहता है किसी ने क्या अच्छी बात कही है कि "भले वातावरण का घर, सैकड़ों पाठशालाओं से उत्कृष्ट होता है"।

यह एक वास्तविकता है कि घर के जीवन का प्रभाव बच्चे और बच्ची की रुचि पर भी पड़ता है, बेटा बाप के घरेलू काम काज सीखता है इसी प्रकार बेटी माँ से गृह प्रबन्ध के कार्य सीखती है। यदि माँ बाप दीन पर चलते होते हैं तो बच्चे बच्चियां भी उन से दीन सीखते और अपनाते हैं,

शेष पृष्ठ ....31 पर

रास्ते बन्द हैं सब, कूच-ए-दअ़वत के सिवा

—मौलाना खालिद सैफुल्लाह रहमानी

कुर्आन मजीद का बयान है कि अल्लाह तआला ने इस्लाम का यह मुक़ाम व मरतबा रखा है कि वह दूसरे तमाम अफ़कार व मज़ाहिब (विचारों और धर्मों) पर परभुत्वशाली रहे, "ताकि उस को पूरे के पूरे धर्म पर प्रभुत्व प्रदान कर दे"।

(अल फ़त्ह–78)

इस्लाम विरोधी ताकतें इस्लाम के चमकदार चेहरे पर कितना भी गुबार डालना चाहें, अल्लाह तआला इस्लाम की रौशनी को पूरा करके रहेंगे, "अल्लाह का फ़ैसला यह है कि वह अपने नूर (प्रकाश) को फैला कर रहेगा"। सूरः अस–सफ़्फ–8)

यह यकीनन अल्लाह का नविशतः (लेख पत्र) है जो विगत काल में भी पूरा होता रहा है और भविष्य में भी इनशा अल्लाह पूरा होता रहेगा। लेकिन किसी चीज़ के ग़ालिब होने के लिए दो चीज़ों की ज़रूरत होती है, एक अन्दरूनी ताक़त, दूसरे वह हथियार जिस को वह इस्तेमाल करता है, सवाल यह है कि वह ताक़त क्या है जो इस्लाम को ग़लबा अता करती है? वह हथियार क्या है जिसको इस्लाम के गलबे के लिए इस्तेमाल करना चाहिए?

अगर कुर्आन मजीद का अध्ययन किया जाये तो इस्लाम की सबसे बड़ी ताक़त उसकी फ़ितरत और अक़्ल से क़रीब उसकी शिक्षाएं हैं जिनको कुर्आन मजीद में "आयाते बय्यनात" अर्थात खुली हुई दलीलों से शब्दार्थ किया गया है, इस्लाम की बुन्यादी शिक्षा अत्यन्त साइन्टिफिक और तार्किक है। मिसाल के तौर पर "तौहीद और आखिरत (एकेश्वरवाद, प्रलोक) का अक़ीदा ले लीजिए, वह एक ऐसे खुदा की ओर इन्सानियत को बुलाना है जो बेहद ताक़तवर मेहरबान, बाखबर है, वह उन बुतों की इबादत से मना करता है जिन को इन्सान अपने हाथों से बना लेता है, और बहुधा अपने हाथों से पानी में डाल भी देता है। ऐसी मनगढ़ंत चीजों को खुदा कहना स्वयं अपने बेटे को बाप, और अपने दास को स्वामी कहने के पर्याय है, इसलिए तौहीद (एकेश्वरवाद) का अक़ीदा शतप्रतिशत बुद्धि के अनुकूल है, इसी प्रकार इन्सानी फितरत तक़ाजा करती है कि इन्सान को उसके अच्छे और बुरे अमल का बदला मिले इसीलिए प्राचीन काल से हर सभ्य समाज में न्याय संबंधी व्यवस्था स्थापित रही, कुर्आन ने इस सिलसिले में आखिरत (प्रलोक) का अक़ीदा पेश किया है, यह अक़ीदा इन्सानी प्रकृति के अनुकूल है इसके अलावा यह अकीदा इन्सान को उस वक़्त भी जुल्म से बचाता है जब कोई देखने वाली आंख और टोकने वाली ज़बान मौजूद नहीं होती, तात्पर्य यह है कि अकीदा व ईमान का मसअला हो या इबादात का, सामाजिक ज़िन्दगी के कानून हों या आर्थिक व्यवस्था से संबंधित

सिद्धान्त हों, राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय संबंध हों, हर जगह इस्लामिक शिक्षा न्याय एवं संतुलन पर आधारित, इन्सानी प्रकृति से अनुकूल और समाजी नीति से मेल खाती है, इस्लाम की सबसे बड़ी ताक़त यही है, इसीलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने के कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन और यहूद व नसारा या इस्लाम दुशमन ताक़तों को कभी यह हिम्मत नहीं पड़ी कि वह अपने मज़हबी और क़ौमी विचारों का मुकाबला इस्लामी शिक्षाओं से करें, बल्कि उन्होंने हमेशा हारे हुए दुशमन के समान प्रोपेगण्डे से काम लिया, नबी के जादूगर और कवि होने का प्रोपेगण्डा किया करते थे, सलीवी जंगों के बीच ईसाईयों ने यहां तक प्रोपेगण्डा किया कि काबतुल्लाह में एक बुत है और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसकी इबादत करते हैं, सलीबी जंगों के बाद चूंकि इस तरह के प्रोपेगण्डे स्वयं ईसाई जनता के नज़दीक उपहास जनक, अस्वीकृति हुए, इसलिए ओरनियलिश्ट ने कुछ नये मिथ्या रोपण किये, और वर्तमान काल में बिना प्रमाण मुसलमानों को उग्रवादी एवं आतंकवादी होने का प्रोपेगण्डा किया जा रहा है और वास्तविकता यह है कि इस्लामी विश्व की कम हिम्मती दीनी गैरत, मिल्ली स्वाभिमान से वंचित होने की वजह से इस मुकदमे में पाश्चात्य देश मुद्दई भी हैं और मुन्सिफ़ भी, लेकिन इस में कोई सन्देह नहीं कि इस्लाम की अन्दरूनी ताकत जो कल थी वही आज भी है मुसलमानों की अपने दीन की तरफ रगबत (रुचि) और विभिन्न देशों में कुबूले इस्लाम की तरफ़ रुझान यह उसी ताकत का असर है, वरना तो मीडिया साधन ने इस्लाम को इस दर्जे बदनाम कर रखा है कि कोई शख़्स पलट कर भी इस्लाम और मुसलमानों की तरफ़ नहीं देखता।

दूसरा सवाल यह है कि वह कौन सा हथियार है जो इस्लाम के ग़लबे के ख्वाब को साकार कर सकता है? आज का दौर सुब्ह शाम हथियारों की तैयारी का दौर है, ऐसे आतशी (विस्फोटक) हथियार तैयार हो चुके हैं कि क्षण भर में एक शहर तो क्या एक मुल्क को जला कर खाक कर दें, पानी को थामे हुए किसी बांध पर एक बम गिरा दिया जाये और पूरा पूरा शहर तूफाने नूह की तरह डूब जाये, ऐसे रासायनिक हथियारों से असलहा का गोदाम भरा हुआ है कि लमहा भर में आबादी की आबादी छलनी हो जाये और शहर का शहर ज़िन्दा लाशों की कब्रिस्तान बन जाये, आज पच्छिम से पूरब तक रक्त पात हथियारों का प्रदर्शन हो रहा है और न जाने कब तक नरसंहार का यह खेल खेला जाता रहेगा, लेकिन इस्लाम को कभी ऐसे हथियारों से ग़लबा हासिल नहीं हुआ, जब मक्का के क्षितिज से ईमान का सूर्योदय हुआ, उस रौशनी का सरचश्मा सिर्फ एक हस्ती थी, पैगम्बरे इस्लाम जनाब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हसती, फिर उस क़ाफ़िले में कुछ खुशनसीब शामिल होते गये, लेकिन हिजरत तक यह एक

निहायत कम तादाद थी फिर मदनी ज़िन्दगी के इबतिदाई पांच साल इस तरह गुज़रे कि बाज़ सहाबा जब सो जाते थे तो अपने बिस्तर में तलवार रख कर सोते थे, कहीं अचानक दुशमन हमला न कर दें, कुर्आन मजीद ने मुसलमानों की सूरते हाल का नकशा खींचा है कि वह खौफ़ज़दा रहते थे कि कहीं उन्हें उचक न लिया जाये, इसलिए यह हकीकत है कि इस्लाम को कहीं भी अपनी सरबुलन्दी और गलबा के लिए विनाश करने वाले हथियारों की ज़रूरत नहीं पड़ी। दुन्या के जिस क्षेत्र में मुसलमान पहुंचे कमोबेश यही सूरते हाल रही, वह एक छोटे से क़ाफ़िले की सूरत में पहुंचे और देखते ही देखते वह उस मुल्क पर अब्रेरहमत बन कर छा गये।

यह कौन् सा हथियार था और उसको किस कारखाने में ढाला गया था यह हथियार दावते दीन का था जिसे हुस्ने अख़लाक़ से चमकाया जाता था, यह ज़मीनों को नहीं दिलों को विजय करता था। यह मुल्कों का नहीं दिमागों का खरीदार था। उसका राज सिंहासन जमीन से पहले दिल व नज़र की ज़मीन पर बिछा करता था, मर्दों औरतों को क़ैदी नहीं बनाता था, बल्कि महब्बत का सौदागर था और दिल व निगाह को अपना असीर (प्रेमी) बना लेता था, इस हथियार से इस्लाम ने अरब महाद्वीप को विजय किया था, हिज़रत के आठवें साल जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का में दाखिल हुए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ केवल दस हजार जांनिसार थे। मक्का को खून बहा कर नहीं जीता गया बल्कि महब्बत की सौगात बांट कर जीता गया, किसी को इस्लाम लाने पर मजबूर नहीं किया गया, लेकिन पैगम्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शिक्षा और उपेक्षा, और इन्सानियत नवाज़ी से प्रभावित हो कर करीब करीब पूरा मक्का मुसलमान हो गया। इसके बाद मुसलमानों ने यकसू हो कर इस्लाम की दावत दी और केवल दो वर्ष बाद जब हज्जतुल वदअ़ के अवसर पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का तशरीफ़ लाये तो लगभग सवा लाख सहाबा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ थे। इसी तरह इस्लाम की रौशनी पूरब पच्छिम फैलती गई, घटायें छटती गईं, कुफ़्र की अंधेरियों की मोटी चादर इस्लाम के रौशन चेहरे के सामने तार तार होती गई, यह सब कुछ इस तरह हुआ कि न इस्लाम के पीछे तलवार थी न तो तुफ़ंग, न जंगी जहाज़ थे, न बम और मीज़ाईल थे, यह सिर्फ़ दअवते दीन का हथियार था, जिसने दुशमनों के जिस्मों को नहीं दिलों को जीत लिया।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़बाने मुबारक से कहलवाया गया कि मेरा और मेरी पैरवी करने वालों का वास्तविक हथियार दअ़वत है, मेरा तरीक़ यही है कि अल्लाह तआ़ला के बन्दों को उसके मालिक की तरफ और कुफ़्र के अंधेरे से ईमान की रौशनी की तरफ़ बुलायें, और मेरी यह दअ़वत पूर्ण

विवेक गहरी समझ और ज्ञानात्मक दृष्टि पर आधारित हो, "तुम इनसे साफ़ कह दो कि मेरा रास्ता तो यह है कि मैं अल्लाह की ओर बुलाता हूं, मैं खुद भी पूरे प्रकाश में अपना रास्ता देख रहा हूं और मेरे साथी भी।

(सूरः युसुफ–108)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मक्की ज़िन्दगी में इस्लाम के विरोधियों से मुक़ाबला का यही गुर बताया गया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हिकमत और दर्दमन्दाना नसीहत के साथ खुदा को न पहचानने वाले लोगों को अपने पालनहार की ओर बुलायें और उनसे मुज़ाकरह वार्तालाप भी करें, इस वार्तालाप में केवल उत्तम प्रणाली का प्रयोग काफी नहीं बल्कि सवोत्तम विधि को अपनायें, "ऐ नबी, अपने रब के मार्ग की ओर बुलाओ हिकमत और अच्छे उपदेश द्वारा, और अच्छी शैली में उन से बहस कीजिये"।

(अल–नहलः125)

इसके विरुद्ध अगर उम्मत दअ़वत के काम को छोड़ दे तो चाहे वह बजाहिर कितने ही मज़लूम हों, वह पैग़ामे हक़ न पहुंचा कर इन्सानियत के साथ जुल्म अत्याचार करने वाली उम्मत है और कुर्आन मजीद ने साफ़ एलान कर दिया है कि ज़ालिम कभी कामयाब नहीं हो सकते, सूरः अल अनआम–135, सूरः यूसुफ़ 23, सूरः अल–कसस–37)

कुर्आन मजीद ने साफ़ तौर पर कह दिया है कि इस उम्मत को भेजा ही गया है और उसको सर्वोत्तम उम्मत से सम्मनित किया गया है, इसलिए कि वह भलाई का हुक्म दे, और बुराई से रोके, "तुम बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के लिए पैदा की गई हो, तुम भलाई का आदेश देते हो और बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो।

(सूरः आले इमरान–110)

उम्मत का दुन्या में भेजने का उद्देश्य है, यह बात खुदाई मनसूबे का हिस्सा है कि जो काम पिछले पैगम्बरों से लिया गया है वही काम इस उम्मत से लिया जाए। अब अगर कोई चीज़ वास्तविक उद्देश्य के लिए लाभदायक न रहे तो क्या वह बाक़ी रहने और इज़्ज़त पाने के हक़दार है, इन्सान को मां बाप, बाल बच्चे, शौहर बीवी से कितना प्यार होता है लेकिन जब वह मौत के मुंह में चले जाते हैं तो कोई उनको अपने घर में नहीं रखता है, उसकी जगह कब्रिसतान होती है, बल्ब और टयूबलाइट को इन्सान अपने दीवार की ज़ीनत बनाता है और अपने सरों पर रखता है लेकिन यह ख़राब हो जाएं और रौशनी देना छोड़ दें तो फिर उसकी जगह डस्टबिन होती है। मिल्लते इस्लामिया की सूरते हाल इस वक्त यही है, ऐसा लगता है कि कुदरत ने इसको डस्टबिन में डाल दिया है जिन का काम और जिन का नाम आलमे इन्सानी मानव संसार के क्षितिज पर सम्मान और उच्चता का चिन्ह समझा जाता था, और जिन की विजय और सफलता की धूम पूरब से पच्छिम तक थी वह आज उस मुक़ाम पर है कि शायद रुसवाई और नामुरादी अपमान और असफलता में कोई उसकी समानता में न हो। ◆◇◆

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्न: चैन वाली घड़ी पहन कर मर्द या औरत नमाज़ पढ़ें तो क्या नमाज़ में कोई खराबी आएगी?

उत्तर: चैन वाली घड़ी पहन कर नमाज़ पढ़ने से नमाज़ में कोई खराबी नहीं आयेगी।

प्रश्न: आज कल बाज कम्पनियां सोने चांदी के अलावा किसी धातु से सुनहरे और रुपहले खूबसूरत जेवरात बनाती हैं, उन जेवरात का इस्तेमाल औरतों के लिए कैसा है?

उत्तर: सोने चांदी के अलावा दूसरी धातुओं से बने हुए खूबसूरत जेवरात का इस्तेमाल औरतों के लिए दुरुस्त है।

प्रश्न: एक नवजवान का निकाह था उसके दोस्तों ने उस को गुलाब के फूलों का गजरा पहना दिया, उसी हाल में उ़स का निकाह हुआ, क्या उस पर कोई गुनाह हुआ?

उत्तर: बाज लोग निकाह के वक्त दूल्हे को गजरा पहनाना जरूरी समझते हैं और आर्डर दे कर गजरा तैयार करवाते हैं और निकाह के वक्त पहनाते हैं ऐसा करना गुनाह है, किसी ने ऐसा किया हो तो अपने गुनाह से तौबा करे लेकिन अगर निकाह से पहले दूल्हे के दोस्तों ने उस को गजरा पहना दिया अगरचि दूल्हे को यह पसन्द न था मगर दोस्तों के लिहाज में पहने रह गया और उसी हाल में उस का निकाह हो गया तो गुनाह तो न हुआ मगर अच्छी बात न हुई, कोई आलिम निकाह पढ़ाता है तो गजरा उतरवा भी देता है। अगर न उतरवाए तो कोई गुनाह भी न होगा।

प्रश्न: एक शख्स ने अपनी बीवी को एक तलाक दी फिर इद्दत के अन्दर ही दूसरी और फिर तीसरी तलाक दे दी, इद्दत के बाद उस औरत ने दूसरे मर्द से निकाह कर लिया, कुछ दिनों बाद किसी वजह से दूसरे शौहर ने भी तलाक दे दी इद्दत के बाद उस औरत ने पहले शौहर से निकाह कर लिया, सवाल यह है कि अब इस शौहर को तीन तलाकों का हक़ हासिल है या नहीं? जब कि यह शौहर इसी बीवी को पहले तीन तलाकें दे चुका है।

उत्तर: इस पहले शौहर को अब फिर तीन तलाकों का हक हासिल है।

दुर्रुल मुखतार)

जब औरत तीन तलाकों के बाद इद्दत गुजार कर किसी दूसरे मर्द से निकाह कर लेती है और फिर उस से भी तलाक पा कर, इद्दत गुजार कर पहले शौहर से निकाह करती है तो पहले शौहर को फिर तीन तलाकों का हक़ हासिल हो जाता है, दुर्रे मुखतार की अरबी इबारत का यही मफ्हूम है।

प्रश्न: एक शख्स ने अपनी बीवी को एक तलाक दी और फिर इद्दत के अन्दर ही दूसरी तलाक दे दी, इद्दत के बाद दोनों में मेल हो गया और दोनों ने निकाह कर लिया, कुछ दिनों बाद फिर अन बन हुई और शौहर ने तलाक दे दी अब यह तलाक रजई होगी या मुगल्लज़ा?

उत्तर: इस सूरत में उस औरत पर तीन तलाकें पड़ गई यानी तलाके मुगल्लज़ा हो गई इसलिए की औरत ने इद्दत के बाद दूसरे शौहर से निकाह नहीं किया इसलिए पहली दोनों तलाकें खत्म नहीं हुई, पहली तलाकों का खात्मा दूसरे शौहर से निकाह पर होता है।

प्रश्न: एक शख्स ने अपनी बीवी को तलाके बाइना दी मगर इद्दत के अन्दर ही दोनों में मेल हो गया और वह बाहम निकाह करना चाहते हैं, क्या वह इद्दत के अन्दर निकाह कर सकते हैं या इद्दत के बाद निकाह करें?

उत्तर: तलाके बाइना में रुजूअ़ नहीं हो सकता निकाह के बाद ही दोनों एक साथ रह सकते हैं तलाके बाइना में शौहर अपनी बीवी मुतल्लक़ा बीवी से इद्दत के अन्दर भी निकाह कर सकता है और इद्दत के बाद भी लेकिन अगर बीवी पहले शौहर से राजी न हो तो दूसरे मर्द से इद्दत के बाद ही निकाह हो सकता है।

प्रश्न: एक औरत जो बेवा है उसकी उम्र 52 साल है वह हज पर जाना चाहती है मगर कोई महरम साथी नहीं है अल्बत्ता उस की बड़ी बहन अपने शौहर के साथ हज को जा रही है, क्या यह बेवा औरत अपने बहन बहनोई के साथ हज को जा सकती है?

उत्तर: 52 वर्ष की औरत का किसी महरम के बगैर बहन बहनोई के साथ हज पर जाना दुरुस्त नहीं है, बहनोई महरम नहीं है, मौलाना अशरफ अली थानवी रह0 ने बूढ़ी औरत जिस की उम्र 60, 70 साल हो उस को महरम के बगैर औरतों के साथ हज पर जाने की इजाजत लिखी है लेकिन पूछे गये सवाल में औरत की उम्र 52 साल बताई गई है इसलिए वह औरत मज़कूरा इजाजत में नहीं आती।

प्रश्न: सास अपने दामाद के साथ सफर पर जा सकती है या नहीं?

उत्तर: सास अपने दामाद के साथ सफर पर जा सकती है, दामाद का रिश्ता महरम का है और यह रिश्ता अबदी (अनन्त) है। महरम से मुराद वह रिश्तेदार हैं जिनके साथ कभी निकाह हलाल न हो दामाद से भी हमेशा के लिए निकाह हराम है, यहां तक कि अगर निकाह के बाद बीवी से मिलाप न हुआ हो और तलाक वगैरा से जुदाई हो गई हो तब भी सास और दामाद का रिश्ता काइम हो जाएगा और इस सास से कभी दामाद का निकाह दुरुस्त न होगा।

प्रश्न: जिस ने खुद हज न किया हो उस से हज्जे बदल करवाना दुरुस्त है या नहीं?

उत्तर: जिस ने अपना हज न किया हो उससे हज्जे बदल करवाना उलमाए अहनाफ के नजदीक दुरुस्त है, लेकिन जिस पर अपना हज फर्ज है उससे हज्जे बदल करवाना मकरूहे तहरीमी है और जिस पर अपना हज फर्ज नहीं है उससे हज्जे बदल करवाना मकरूहे तन्ज़ीही है। इसलिए बेहतर यह है कि जिस ने अपना हज कर लिया हो उससे हज्जे बदल करवाया जाए।

(रद्दुल मुहतार: 4/20–21)

प्रश्न: एक शख्स पर हज फर्ज था लेकिन न वह अपनी जिन्दगी में हज कर सका

और न आखिर वक्त हज की वसीयत कर सका अगर उसकी औलाद उसकी तरफ से हज करे तो क्या वालिद की तरफ से हज अदा हो जाएगा?

उत्तर: हज फर्ज होने के बावजूद कोई शख्स न जिन्दगी में हज कर सका न आखिर वक्त तक हज की वसीयत कर सका लेकिन औलाद मय्यित की तरफ से हज करे तो अल्लाह से उम्मीद है कि हज अदा हो जाएगा और वह शख्स अल्लाह की पकड़ से बच जाएगा। इब्ने आबिदीन ने लिखा है कि अबू हनीफा रह0 ने कहा कि यह हज उस की तरफ से सही होगा।

(रद्दुल मुहतार:4/16)

प्रश्न: क्या औरत मर्द की तरफ से और मर्द औरत की तरफ से हज्जे बदल कर सकते हैं?

उत्तर: मर्द औरत की तरफ से और औरत मर्द की तरफ से हज्जे बदल कर सकते हैं। इस में कोई हरज नहीं है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 की एक रिवायत बुखारी में है कि कबीला बनु ख़सअ़म की एक खातून ने हिज्जतुल वदअ़ा के मौके पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मालूम किया कि मेरे वालिद बहुत बूढ़े हैं क्या मैं उन की तरफ से हज कर सकती हूं? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया हां यह हदीस सराहत के साथ बताती है कि औरत भी मर्द की तरफ से हज्जे बदल कर सकती है।

प्रश्न: हज्जे बदल में क्या हज्जे इफराद या किरान ही जरूरी है या तमत्तुअ़ भी किया जा सकता है? जब कि हिन्दुस्तान के लोग आम तौर से हज्जे तमत्तुअ़ करते हैं।

उत्तर: बेशक फ़िक़्ह की किताबों में यह है कि हज्जे बदल में हज्जे इफराद या किरान ही किया जा सकता है लेकिन मौजूदा हालात में दिक्कतें हैं उनको सामने रखते हुए बाज फुक़हा के कौल पर हिन्द पाक के उलमा ने हज्जे बदल में हज्जे तमत्तुअ़ की इजाजत पर फ़त्वा दिया है इस्लामिक फ़िक़्ह एकेडमी इण्डिया ने भी अपने सीमीनार में ब इत्तिफाके राय जवाज ही पर फैसला किया है इस लिए हज्जे बदल में तमत्तुअ़ किया जा सकता है अगर हज्जे बदल कराने वाला जिन्दा हो तो उस से हज्जे तमत्तुअ़ की इजाजत ले लेना बेहतर है और कुर्बानी उन्हीं की तरफ से कर दी जाए।

(अलबहरुर्राइक: 3/116)

प्रश्न: बाज हजरात हज के सफर में अपने साथ अपने छोटे बच्चों को ले जाते हैं और उन को एहराम पहना कर पूरे हज के अरकान में अपने साथ रखते हैं सवाल यह है कि क्या उन बच्चों के अ़फआले हज अदा हो जाएंगे? जब की वह शरअ़ के मुकल्लफ नहीं होते और यह उन का हज नफ़्ल होगा या फर्ज?

उत्तर: बेशक बच्चे शरअ़ के मुकल्लफ नहीं होते लेकिन अगर वालिदैन अपने हज के साथ साथ बच्चों के अफआले हज अदा करते हैं तो यह हज हो जाएगा और नफ़्ली हज होगा बाज फुक़हा की राय यह है कि बच्चे को हज का सवाब मिलेगा और वालिदैन को तालीम व तरबीयत का

अज्र मिलेगा गरज़ कि दोनों को इस का फाइदा मिलेगा अगरचि अरफा का वकूफ़ और मुजदलफा का वकूफ़ बच्चे की तरफ से खुद होगा और दूसरे अरकान वालिद बच्चे की तरफ से नीयत कर के अदा करेंगे अगर बच्चे के एहराम में खिलाफ वर्जी होगी तो वह मुआफ होगी कोई तावान दम वगैरा नहीं देना पड़ेगा।

(मर्किंयुल फलाह मअ़तहतावी:484)

प्रश्न: एक बाप ने अपनी बेटी से उस के निकाह के लिए इजाज़त इस तरह मांगी कि एक परचे पर लिखा कि तुम्हारा निकाह इतने महर पर फुलां से करने जा रहा हूं अगर इजाज़त है तो परचे पर दस्तखत कर दो, लड़की ने परचा पढ़ कर उस पर दस्तखत कर दिए यह इजाज़त दुरूस्त हुई या नहीं?

उत्तर: पूछी गई सूरत में यह इजाज़त दुरूस्त है।

प्रश्न: जब लड़की का रिश्ता तै होता है तो हफ्तों पहले लड़की जानती है कि मेरा निकाह फुलां से होने वाला है ऐसी सूरत में अगर लड़की से निकाह की तारीख से कई रोज पहले उस के निकाह की इजाज़त ले ली जाए तो यह इजाज़त दुरूस्त होगी या नहीं?

उत्तर: पूछी गई सूरत में इजाज़त दुरूस्त होगी मगर निकाह का इजाब व क़बूल एक ही मजलिस में होना जरूरी है।

प्रश्न: बालिग़ होने के बाद किसी की बहुत सी नमाज़ें छूट गई हों तो वह उन को अदा करने के लिए कजाए उम्री पढ़े तो उसका क्या तरीका है?

उत्तर: कजाए उम्री की आसान सूरत यह है कि वह हर नमाज़ की नीयत करे यूं कि फुलां वक्त की जो पहली नमाज़ मेरे जिम्मे है उस को अदा कर रहा हूं इस तरह हर वक्त के फर्ज नमाज़ को पढ़ता रहे यहां तक कि उस को इतमीनान हो जाए कि मेरी नमाजें पूरी हो गई मगर मकरूह अवकात जैसे तुलूअ़, गुरूब और जवाल के वक्तों में न पढ़ें।

प्रश्न: हमारी बस्ती में 2, 3 घर महदवी फिरके के आ बसे हैं, उन में से एक बड़े मियां हमारी मस्जिद में नमाज़ पढ़ने आते हैं, वह कभी कभार मस्जिद में अज़ान भी कह देते हैं, और जब इमाम साहिब नहीं होते हैं तो नमाज़ भी पढ़ा देते हैं उन के पीछे हम अहले सुन्नत की नमाज़ होती है या नहीं?

उत्तर: अगर कोई शख्स महदवी फिरके के अक़ाइद रखता है तो वह मोमिन नहीं है उस के पीछे नमाज़ दुरूस्त न होगी, उन के अक़ाइद कुफ्रिया हैं मुफ्ती किफायतुल्लाह रह0 ने इस फिरके के बारे में कुफ्र का फतवा दिया है। (किफायतुल मुफ्ती: 1/131) मुल्ला अली कारी ने भी इस फिरके को बातिल फिरका कहा है।

(मिरकात: 5/183)

प्रश्न: महदवी फिरका क्या है? यह लोग मुसलमान हैं या नहीं?

उत्तर: महदवी फिरके के अक़ाइद रखने वाले मुसलमान नहीं हैं इन के बारे में तफ्सील जानने के लिए "दाइरा मआरिफे इस्लामिया जिल्द 21 पेज नं0 859" प्रकाशित लाहौर में देखना चाहिए।

❖❖❖

पहरेदारी

—मौलाना नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी

भारत के इतिहास में कई ऐसे शासकों का उल्लेख मिलता है जो अपनी रात की सुखमय निद्रा निछावर कर के गहरी नींद में सोती जनता में चक्कर लगा कर उन का दुख–दर्द जानने का प्रयास करते तथा उनकी सहायता करते। साथ ही चोर–बदमाशों का पता लगा कर उन्हें दण्ड देते तथा उनमें सुधार करते। अरब महाद्वीप में इस्लामी दौर के आरम्भ में सभी शासकों का यही हाल था। वह अपना महल न बनवाते। भारी वेतन न लेते। सरकारी खजाने से उतना ही लेते जिससे एक मजदूर का गुजर–बसर हो सके तथा वह रात को आराम की नींद न सोते। भेष बदल कर चुपके से निकल जाते और प्रजा का हाल मालूम करते। उनकी जरूरतें पूरी करते। इसी प्रकार की एक घटना यहां लिखी जाती है।

अरब के रेगिस्तानी बद्दू (देहाती) जब एक स्थान से दूसरे स्थान हेतु अपने परिवार के साथ निकलते तो अपना खेमा साथ रखते। जहां ठहरते खेमा तान कर अपना घर बना लेते। अक्सर देहात वाले किसी काम से नगर आते तो इसी प्रकार आते और खेमा लगा कर दो चार रोज उस में रहते और अपना काम कर के चले जाते। ऐसे खेमों की इस्लामी शासन में बड़ी देख भाल होती थी। इसी तरह का एक खेमा लगा हुआ था। इस्लामी शासक हजरत उमर रज़ि0 रात में भेष बदल कर उस खेमे के पास पहुंचे। खेमे में देहाती बैठा हुआ था। अन्दर से कराहने की आवाज आ रही थी। भेष बदले व्यक्ति ने देहाती से पूछा कि क्या बात है? अन्दर कौन कराह रहा है? बद्दू ने कहा, मेरी पत्नी को बच्चा पैदा होने वाला है, उसकी तकलीफ है, वही कराह रही है। पूछा, क्या कोई उसकी सहायता के लिए मौजूद है? देहाती ने कहा नहीं, यहां मेरा कोई नहीं, मैं देहात से आया हूं। भेष बदले व्यक्ति तो अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर थे, देहाती को क्या मालूम कि ये कौन हैं। आप जल्दी से अपने घर आये और पत्नी से कहा कि मालिक ने पुण्य कमाने का अवसर दिया है जल्दी चलो, एक बद्दू की पत्नी बच्चा होने के कष्ट में ग्रस्त है, उसकी सहायता करके पुण्य कमाओ। अमीरुल मोमिनीन की पत्नी जरूरी सामान ले कर तुरन्त अमीरुल मोमिनीन के साथ देहाती के खेमे में पहुंच कर उसकी सहायता करने लगीं। थोड़ी देर के बाद अन्दर से आवाज आयी, अमीरुल मोमिनीन! अपने दोस्त को बेटा पैदा होने की बधाई दीजिए।

अब देहाती के कान खड़े हुए कि यह भेष बदले अमीरुल मोमिनीन हैं। वह क्षमा चाहने लगा। अमीरुल मोमिनीन ने उससे कहा कि ये तो मेरा कर्तव्य था। इसमें क्षमा चाहने की क्या बात है? फिर हज़रत उमर रज़ि0 ने उसे जरूरत की चीज़ें उपलब्ध करा दीं और बच्चे का वज़ीफ़ा मुकर्रर कर दिया

शेष पृष्ठ ....35 पर

कोशिश किये जाओ

—इदारा

दुकाँ बन्द करके रहा बैठ जो तो दी उसने बिल्कुल ही लुटया डुबो
न भागो कभी छोड़ कर काम को तवक्को तो है ख़ैर जो हो सो हो
किये जाओ कोशिश मेरे दोस्तो

अगर ताक़ में तुमने रख दी किताब तो क्या दोगे कल इमतिहां में जवाब
न पढ़ने से बेहतर है पढ़ना जनाब कि हो जाओगे एक दिन कामयाब
किये जाओ कोशिश मेरे दोस्तो

न तुम हिचकचाओ न हरगिज़ डरो जहां तक बने काम पूरा करो
मशक्कत उठाओ मुसीबत भरो तलब में जियो, जुसतुजू में मरो
किये जाओ कोशिश मेरे दोस्तो

जो तुम शेरे दिल हो तो मारो शिकार कि ख़ाली न जाएगा मर्दों का वार
मशक्कत में बाक़ी न रखना उधार जो हिम्मत करोगे तो बेड़ा है पार
किये जाओ कोशिश मेरे दोस्तो

जो बाज़ी में सबक़त न ले जाओ तुम ख़बरदार हरगिज़ न घबराओ तुम
न ठिठको न झिझको न पछताओ तुम ज़रा सब्र को काम फ़रमाओ तुम
किये जाओ कोशिश मेरे दोस्तो

शिक्षा एवं संस्कृति के प्रसार में उमैय्या खलीफ़ाओं का योगदान

—डॉ0 रिजवान अहमद

ज्ञान, ध्यान और शिक्षा दीक्षा की महत्ता और उसकी आवश्यकता हर समय और हर युग में रही है। शिक्षा और ज्ञान ही से संसार में रौनक है। शिक्षा ही की सहायता और उसके सहारे इन्सान दुन्या में सुख, शान्ति, शक्ति और सम्पन्नता प्राप्त करता है। अच्छा मनुष्य बनने और सुचारु ढंग से संसार को चलाने के लिए भी शिक्षा कि आश्यकता होती है। बिना शिक्षा और जागरूकता के कुछ भी नहीं हो सकता है।

सभी राज्य परिवारों के समान बनी उमैय्या के खलीफाओं ने भी इस विषय की ओर पूरा ध्यान दिया। और पूर्ण रूप से शिक्षा के प्रसार एवं उन्नति से रुचि ली। वास्तव में खुलफाए राशिदीन के तुरंत बाद ही बनी उमैय्या को शासन एवं प्रशासन का अवसर मिला। चूंकि इन का ज़माना पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने से बहुत ही निकट था, इन्होंने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शिक्षाओं से और प्रधान खलीफाओं की शैक्षिक गतिविधियों से पूर्ण रूप से प्रोत्साहन और प्रेरणा ली। उमैय्या खिलाफत के संस्थापक हज़रत अमीर मुआविया स्वयं पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सम्बन्धी और आपके क़ातिब—ए—वही थे। अर्थात अमीर मुआविया जब कुर्आन नाज़िल होता था, तो उसके लिखने वालों में से एक थे। इनके लिद में शिक्षा की बड़ी महत्ता थी। कुर्आन की आयतों के अतिरिक्त बहुत सी हदीसें जो पाठ्य पठन से सम्बन्धित थीं वह उनकी निगाहों में थीं। इसलिए उन्होंने और अन्य उम्वी खलीफाओं ने शिक्षा से विशेष रुचि ली और सम्पूर्ण उम्वी राज्य में शिक्षा के प्रसार का प्रबंध किया। इसी प्रकार अधिकतर मस्जिदों में या दूसरी जगहों पर सहाबा और आलिमों ने भी निजी रूप से पाठय पठन का कार्य किया। कुछ इतिहासकारों ने बनी उमैय्या के सांस्कृतिक क्रिया कलापों और उनकी सामाजिक गतिविधियों पर पर्दा डालने की कोशिश की है। परन्तु विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि उमैय्या खलीफा न तो शिक्षा की ओर से उदासीन थे और न ही उमैय्या शासन काल शिक्षा और सभ्यता से वंचित था।

हज़रत अमीर मुआविया का ज़माना यद्यपि कि उम्वी खिलाफत का शुरुआती ज़माना था। खलीफा को अपनी शासन पद्धति को संभालने, प्रजा कि देख—भाल, रास्तों और बाज़ारों कि सुरक्षा, पुलिस और सेना के विभागों को सुदृढ़ और नियमित करने के अतिरिक्त अपने शत्रुओं को भी नियंत्रण में रखने की ओर कार्य करने की आवश्यकता थी जिसमें वह व्यस्त थे। फिर भी अपनी महात्वाकांक्षा कुशलता के

आधार पर संपूर्ण राज्य का माहौल शैक्षिक एवं धार्मिक बनाए रखने के लिए अमीर मुआविया ने मस्जिदों कि तामीर की, अफ्रीका में कैरवान नामक नगर को बसाया और यहां के बरबरी क़बीलों में इस्लाम की शिक्षा फैलाने का पूरा प्रबंध किया। द्वितीय खलीफा हज़रत उमर की भांति अमीर मुआविया ने भी मुजाहिदों के बच्चों के लिए वज़ीफे मुकर्रर किए। इसी प्रकार सबसे पहले अमीर मुआविया ने अरबों में इतिहास लेखन की ओर ध्यान दिया और उबैद बिन शुरैह नामी व्यक्ति से अजम के बादशाहों और उनकी भाषाओं से सम्बन्धित एक पुस्तक लिखवाई।

यजीद बिन अमीर मुआविया प्रथम का ज़माना राजनीतिक उथल–पुथल में बीत गया। शिक्षा से संबन्धित कोई ठोस काम न हो सका। अलबत्ता यजीद के बेटे खालिद ने रसायन विज्ञान सीखने के लिए एक राहिब (पादरी) से पढ़ना शुरु किया। अपनी शिक्षा समाप्त करने के बाद खालिद ने अपना संपूर्ण जीवन इस विद्या अर्थात रसायन विज्ञान की सेवा में लगा दिया। खालिद ने रसायन विज्ञान के विषय पर चार पुस्तकें लिखीं हैं जिनकी चर्चा इब्ने नदीम ने अल फिहरिस्त में किया है।

खलीफा वलीद प्रथम, बनी उमैय्या का एक सफल शासक गुज़रा है। यद्यपि वह नाम मात्र का पढ़ा–लिखा था फिर भी उसकी उपलब्धियों की कहानी बहुत रोचक और उत्साह वर्धक है। उसने प्रायः दस वर्षों तक शासन किया, बड़ी विजय प्राप्त की। सिन्ध, समरकन्द, अफ्रीका और स्पेन जैसे देशों के बड़े–बड़े क्षेत्र इसी के ज़माने मे विजित हुए। इस खलीफा ने जन कल्याण के बहुत से कार्य किए। ज़नता की सुविधा और राहत के लिए अस्पताल बनवाए, सराएं बनवाईं, सड़कें, नहरें और कुओं का निर्माण कराया, अनाथों, विकलांगों और असहायों के पालन–पोषण तथा देख–भाल और उनके उपचार का संपूर्ण प्रबंध करवाया। सही मायनों में वलीद प्रथम का शासन काल बनी उमैय्या का स्वर्ण युग कहलाता है। इस युग में खलीफा वलीद ने शिक्षा के प्रसार पर पूरा ध्यान दिया। उसने दीन सीखने और कुर्आन पढ़ने की ओर अरब जनता का ध्यान आकर्षित कराया। वह सदैव लोगों को पढ़ने की तरफ उभारता रहता था। कुर्आन को ज़बानी याद करने के लिए उसने छात्र वृत्तियां निर्धारित कर दी थीं। जो लोग पढ़ने में लापरवाही करते उन्हें सज़ा दी जाती थी।

चूंकि उस समय मुसलमानों की शिक्षा और ज्ञान तथा ध्यान का केन्द्र इस्लाम धर्म ही था। और उन शिक्षाओं की आधारशिला कुर्आने पाक था। इसलिए हर प्रकार की कठिनाईयों के विपरीत कुर्आनी शिक्षा की महत्ता और गैर अरब नव मुस्लिमों को ध्यान में रखते हुए उस समय हज्जाज ने कुर्आन मजीद पर ऐराब अर्थात ज़बर, ज़ेर, पेश और नुक्ते लगवाये ताकि सब लोग सरलता से कुर्आन पढ़ सकें शिक्षा के क्षेत्र में अधिक रुचि और जनता की सुविधा को ध्यान में रख कर आलिम तथा फकीह (धर्म शास्त्री)

नियुक्त किए गये और उनकी तनख्वाहें भी निर्धारित की गईं ताकि इस क्षेत्र में निरंतरता बनी रहे और पाठ्य पठन का दायरा बढ़ता जाये।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज जो सच्चे खलीफा या नेक खलीफा की उपाधि से सुशोभित थे कुछ इतिहासकार जिनकी गणना खुलफाए राशिदीन में भी करते हैं इनका दृष्टिकोण अन्य उम्वी खलीफाओं से भिन्न था। इनका विचार था कि इस्लाम दुन्या में लोगों की भलाई और सुधार के लिए आया है इसलिए यह दुन्या में खूब फैले और खूब फले–फूले। ईश्वर ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सुधारक और मार्गदर्शक बना कर भेजा था। तहसीलदार अथवा कर वसूल करने वाला नहीं। आपका यह विचार स्वर्ण शब्दों में लिखे जाने योग्य है कि इस्लाम और उसकी शिक्षाएं फैलें उसके क्षेत्रफल को फैलाने की आवश्यकता नहीं है। खलीफा उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ स्वयं उच्च कोटि के विद्वान थे और राज्य के अन्य विद्वानों तथा बुद्धिजीवियों का आदर तथा सम्मान करते थे। राज्य की समस्याओं के निपटारे में उन महात्माओं से परामर्श भी करते थे। मुस्लिम जनता की धार्मिक शिक्षा से इन्हें विशेष लगाव था। काजी अबू बक्र इब्ने हज्म को एक पत्र लिखा कि लोगों को चाहिए की शिक्षा का प्रसार करें। इसके लिए छोटे–छोटे दल बना कर बैठें और शिक्षा दें। कहीं शिक्षा का अंत न हो जाए। उन्होंने अपने एक गवर्नर को पत्र लिखा कि विद्वानों को आदेश दो कि मस्जिदों में विद्या का प्रचार करें। जो विद्वान शिक्षा के प्रसार में लगे हुए थे खलीफाओं ने उन्हें रोजी रोटी की चिंता से मुक्त कर दिया था। हिम्स के गवर्नर को लिखा कि जो लोग संसार को छोड़ कर अपने आप को शिक्षा दीक्षा में लगाए हुए हैं और फिक्ह की शिक्षा के लिए अपने आप को समर्पण कर रखा है। बैतुलमाल से सौ–सौ रूपया उनका वजीफा मुकर्रर कर दिया जाए। इन्हीं खलीफा ने विभिन्न प्रदेशों में शिक्षा के लिए अपने यहां से विद्वान भेजे। हजरत नाफे जो मदीना के एक बड़े विद्वान अथवा धर्म शास्त्री थे हदीस की तालीम के लिए इन को मिस्र भेजा। कारी जासल बिन अदनान को किराअत की तालीम के लिए मिस्र व मग़रिब भेजा।

उमर बिन अब्दुल अज़ीज की सबसे अधिक प्रशंसनीय उपलब्धी हदीस की रक्षा और इस्लामी जगत में उसके प्रसार का कार्य था। यदि उसकी ओर उन्होंने ध्यान न दिया होता तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसों का बड़ा ज़खीरा नष्ट हो जाता। मदीना के गवर्नर अबू बक्र इब्ने हज़्म को लिखा कि हदीसों को तलाश व खोज कर के उन्हें लिख लो मुझे आलिमों के साथ इल्म के भी मिट जाने का डर है।

उमर बिन अब्दुल अजीज के बाद कई और नामवर उम्वी खलीफा गुज़रे हैं और उन्होंने अरब साम्राज्य को सशक्त और सुरक्षित करने की दिशा में बड़े कार्य किए हैं परन्तु उमैय्या शासन का अन्तिम चरण राजनीतिक उथल–पुथल से भरा हुआ

था। इसलिए शिक्षा के क्षेत्र में कोई विशेष कार्य नहीं हो सका परन्तु जो शिक्षा पद्धति स्थापित हो गई थी वह चलती रही और विकास के मार्ग पर अग्रसर रही।

उपरोक्त पंक्तियों से यह जाहिर होता है कि बनी उमैय्या का शासन काल शैक्षिक गतिविधियों से खाली न था। उस ज़माने में भी बड़े विद्वान, कवि, लेखक, आलिम और कुर्आन, हदीस, तफसीर, फिक्ह अथवा धर्मशास्त्र के ज्ञानियों की बड़ी संख्या हर प्रान्त में विद्यमान थी। बनी उमैय्या की इन्हीं शैक्षिक, वैज्ञानिक, सांस्कृतिक उन्नति के आधार पर बाद के दिनों में अब्बासी खलीफाओं ने मुसलमानों में वैज्ञानिक युग का शुभारंभ किया और विभिन्न विषयों में एक वैभवशाली सांस्कृतिक इतिहास की रचना की। ◆◆◆

बच्चों की शिक्षा दीक्षा.....

बच्चे और बच्चियां मां बाप, भाई बहन और घर के वातावरण से ही शिष्टता तथा सभ्यता सीखते हैं इसी प्रकार जिन घरानों का वातावरण साहित्यिक तथा वैज्ञानिक होता है उन घरों के बच्चों में प्रायः साहित्य तथा विज्ञान से रुचि पैदा हो जाती है यह बात बराबर देखने में आती है कि किसान के बेटे में खेती से और व्यापारी के बेटे में व्यापार से स्वतः रुचि पैदा हो जाती है और वह अपने माता पिता के साथ उन कामों को करते हुए उन में कुशलता प्राप्त कर लेता है।

इस प्रकार बच्चे की रुचि जानने के लिए उस के घर के वातावरण से मदद लेना पड़ती है बच्चे और बच्चियां अपने माता पिता के जीवन और उनके चरित्र से प्रभावित होते हैं अतः माता पिता को चाहिए कि वह अपने भले आचरणों तथा पवित्र जीवन से अपने बच्चों और बच्चियों को सीख दे कर अच्छा नागरिक बनाएं।

बच्चा पाप रहित विकार रहित जन्म लेता है उस का बचपन सीधा सादा होता है उस में प्राकृतिक सच्चाई होती है परन्तु बुरा वातावरण उस को विकृत कर देता है और बिगाड़ देता है अर्थात उस को जैसी संगत मिलती है वह वैसा ही बनने लगता है इसी कारण परामर्श दिया जाता है कि बच्चों को बुरी संगत से बचाएं और उनके सामने भले मनुष्य के उदाहरण प्रस्तुत करके उनको भला मनुष्य बनाने का प्रयास करें।

वास्तव में मां का पथ प्रदर्शन बच्चों और बच्चियों का व्यक्तित्व बनाने में बड़ा महत्व रखता है बच्चा अपने स्वभाव में अपनी मां से अधिक निकट होता है अपनी मां ही को वह अपनी सहानुभूति का हितैषिका तथा सहायका जानता है एक मां अपनी संतान की भलाईयों और बुराईयों से भली भांति अवगत होती है वह बड़ी सरलता से अपनी संतान की बुराईयों को दूर कर सकती है और भलाईयों को उजागर कर सकती है मां द्वारा बच्चों को जो शिक्षा मिलती है वह जीवन भर काम आती है किसी ने क्या अच्छी बात कही है कि "एक गुणवान मां सैकड़ों गुरुजनों से उत्कृष्ट होती है"।

❖❖❖

धर्म की मौलिकता

—इं0 जवेद इकबाल

फरवरी 2017 के अंक में धर्म की मौलिकता शीर्षक लेख में हम पढ़ चुके हैं कि आरम्भिक काल से ही, इन्सान को प्रत्येक नबी के माध्यम से, खुदा–ए–पाक ने जो शिक्षा दी वह तीन बातों पर आधारित थी–

(1) खुदा के अलावा किसी अन्य की उपासना न करो, वर्तमान में पाये जाने वाले विभिन्न धर्मों की प्रत्येक किताब में खुदा की विशुद्ध भक्ति के निर्देश आज भी मौजूद हैं।

(2) दूसरी महत्वपूर्ण शिक्षा यह थी कि उस मालिक ने इन्सान को धरती पर परीक्षा हेतु भेजा है और प्रत्येक को अपना अपना परीक्षा काल पूरा कर के उसी मालिक के पास लौट कर जाना है। वहां पर निर्णय के दिन वह मालिक प्रत्येक व्यक्ति के कर्मों का हिसाब करेगा।

(3) तीसरी शिक्षा यह भी थी कि तुम अपने वर्तमान काल के ईशदूत पर विश्वास करो, उस की बातों को मानो और उस के पदचिन्हों पर चलो।

सभी नैतिक शिक्षायें और धार्मिक उपासनायें इन्हीं तीन मूल बिन्दुओं में सिमटी हुई हैं।

अब आगे पढ़िये–

इस्लाम धर्म जो आदि कालीन धर्मों का वर्तमान पूर्ण विकसित स्वरूप है पांच मूल उपासनाओं का आदेश देता है जिन में एक मानसिक, दो शारीरिक, एक आर्थिक और एक तीर्थ यात्रा से सम्बन्धित है। सर्व प्रथम मांसिक उपासना केवल इतनी है कि मूल मंत्र (कलिमा) ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह का उच्चारण करके ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण और हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के पद चिन्हों पर चलने का संकल्प लिया जाता है। इस मूल मंत्र को मन से स्वीकार करने के बाद अन्य चार उपासनाओं पर अमल करना जरूरी हो जाता है। अतः ईश्वर के आदेशों का पालन इस उपासना में भी निहित है।

सर्वप्रथम प्रतिदिन पांच समय की उपासना (नमाज़) है। दूसरे नं0 पर प्रति वर्ष रमजान के एक महीने के उपवास (रोजे) रखना है। यह दोनों शारीरिक उपासनायें हैं। नमाज़ से किसी के लिए भी छूट नहीं है, यदि कभी कोई न पढ़ सके तो बाद में अवसर मिलते ही पढ़ ले। रोजे के लिए बीमार या मुसाफिर आदि के लिए इतनी छूट है कि स्वस्थ होने पर एवं यात्रा पूरी होने पर छूटे हुए रोजे पूरे कर ले। इन उपासनाओं का संबंध व्यक्ति और ईश्वर (बन्दे और अल्लाह) के बीच का मामला है।

चौथी आर्थिक उपासना जिसे ज़कात कहते हैं। केवल धनी लोगों के लिए है। इस के द्वारा मालदार और निर्धन व्यक्ति के बीच प्रेम व्यवहार का संबंध बनता है। अल्लाह तआला चाहता है कि उसके कुछ बन्दों की सहायता उन लोगों द्वारा की जाये जिन्हें उस ने माल ज़रूरत से ज़ियादा दिया है।

शेष पृष्ठ ....37 पर

महदवी फिरके से सावधान

—हिन्दी इम्लाः हुसैन अहमद

—इदारा

कुछ महीनों पहले सुनने में आया था कि महल्ला मछली मुहाल लखनऊ में कोई साहिब छुपे तौर पर लोगों को महदी से बैअ़त की दावत देते हैं और जब किसी को तैयार कर लेते हैं तो उसे किसी जरूरत के बहाने किसी बड़े शहर में ले जा कर वहां महदी का दावा करने वाले से बैअ़त कराते हैं लेकिन यह काम इतने खुफया तौर पर हो रहा है कि तहक़ीक़ करने पर उस दल्लाल को पकड़ा न जा सका।

इधर अमरावती से एक खत आया कि हमारे यहां एक पूरी की पूरी बस्ती महदवियों की है उन के बारे में कुछ मालूमात दीजिए इस लिए यह लेख लिखा जा रहा है।

बेशक हदीसों से साबित है कि कियामत के करीब हज़रत मेंहदी रह0 का जुहूर होगा हदीस में उन की बड़ी फजीलत बयान हुई है। हज़रत महदी रह0 के सिलसिले की बाज हदीसें सही हैं तो बाज जईफ और बाज मौजूअ़ (गढ़ी हुई) इस लिए शैतान को खूब मौका मिला कि वह अपने एजेंन्टों को खड़ा कर के भोले भाले दीन से ना वाकिफ मुसलमानों के दीन को बरबाद करे और किसी हद तक वह इस में कामयाब भी रहा उसके एजेन्टों का सिलसिला अब्बासी दौर ही से चल पड़ा था। अब से 35,36 वर्ष पहले सऊदिया में भी एक साहिब ने महदी होने का दावा किया था जो आखिर कार कत्ल किए गए थे। अल्लाह का शुक्र है कि अरब देशों में महदी फिरका न चल सका।

भारत के एक शहर जौनपुर में नवीं सदी हिजरी के अन्त में एक शख्स सय्यिद मुहम्मद नाम का पैदा हुआ वह बड़ा विद्वान था। इस्लामी उलूम से भली भांति परिचित था उपासनाओं में उसका एक स्थान था दुन्या के लालच से दूर था। त्यागी जीवन बिताता था। परन्तु कदाचित उस के त्यागी जीवन में निःस्वार्थता न थी अतः शैतान को उस पर जाल फेंकने का अच्छा अवसर मिल गया और उस ने उस से अपने महदी होने का दावा करा दिया। उस के त्यागी जीवन और ज्ञान से अच्छे अच्छे लोग प्रभावित हो गए फिर उस ने लोगों से कहा कि मैं महदी हूं मेरा आज्ञा पालन अनिवार्य है जो मेरी अवज्ञा करेगा वह जहन्नम में जले गा इस प्रकार उस का जादू चल गया उसी के मानने वाले महदवी कहलाते हैं वह जौनपुर से गुजरात गया वहां भी उस के मानने वाले बहुत से पैदा हो गए वह सफर कर के हिजाज़ (सऊदी अरब का एक सूबा) भी गया वहां भी अपने महदी होने का एलान किया वहां से वापस हो कर अफगानिस्तान के रास्ते फराह गया जो उस समय ईरान में था और अब अफगानिस्तान में है। वहीं उस का देहान्त हो गया।

उस का दावा ग़लत था हदीसों के अनुकूल न था परन्तु कम इल्म रखने वाले उस का मुकाबला न कर पाते थे लेकिन बाज बड़े उलमा उठे और सिद्ध किया कि वह शैतान का एजेन्ट है। हिजाज जा कर वहां के उलमा के सामने उस के महदी होने के

दावों को पेश किया और बताया कि उस का दावा है कि मेरा अवज्ञाकारी जहन्नम में जले गा हिजाज के उलमा ने बिल इत्तिफाक (सर्व सहमति) से फतवा दिया कि वह मुलहिद (विधर्मी) है उस को कत्ल की सजा मिलना चाहिए।

उन्नीसवीं सदी इस्वी के अन्त में कादयान में मिर्जा गुलाम अहमद पैदा हुआ। शैतान ने उस को भी अपना एजेन्ट बनाया उस ने दावा किया कि मैं मसीहे मौऊद और महदी हूं। उस के भी बहुत से मानने वाले हो गये मगर उस के मानने वाले अपने को महदवी नहीं कहते बल्कि अहमदी कहते हैं। लेकिन हम लोग उन को कादयानी कहते हैं। यह फिरका (समुदाय) भी पथ भ्रष्ट है इस्लाम से खारिज़ है। हमारी जानकारी में महदवी सय्यिद मुहम्मद जौनपुरी के अनुयायी ही कहलाते हैं। लेकिन उन में के जो कुछ लोग सुन्नी मुसलमानों के बीच में रहते हैं उन में कुछ सुधार हो गया है लेकिन दूसरे महदवी जो सय्यिद मुहम्मद जौनपुरी का अनुकरण करते हैं वह पूरी तरह पथ भ्रष्ट हैं अल्लाह उन को हिदायत दे।

हज़रत महदी के विषय में जो सहीह रिवायतों से सिद्ध है वह हम यहां लिखते हैं। ताकि हमारे भाई उन से परिचित हो कर महदवियों के धोखे में ना आएं अपितु उन को सत्यमार्ग (इस्लाम का सीधा रास्ता) दिखा सकें।

हज़रत महदी रह0 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नवासे हजरत हसन रज़ि0 की संतान से होंगे उन का नाम मुहम्मद होगा वह मदीना तय्यिबा में पैदा होंगे, चालीस वर्ष की आयु में महदी होने का दावा करेंगे लोग उन से बैअ़त कर के अपना खलीफा बना लेंगे उन की हुकूमत काइम हो जाएगी खूब बारिश होगी खूब अनाज पैदा होगा धन की रेल पेल होगी वह अपना कोई धर्म न चलाएंगे अपितु नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत पर लोगों को चलाएंगे, उन्हीं के समय में बड़ा दज्जाल निकले गा। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अपने शरीर के साथ आसमान से उतारे जाएंगे वह हज़रत महदी के पीछे नमाज़ पढ़ेंगे वह भी अपनी ईसाई शरीअत न चलाएंगे अपितु अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शरीअत का अनुकरण करेंगे, दज्जाल जो शैतान का बड़ा प्रतापी एजेन्ट होगा और लोगों को अपने शैतानी चमत्कारों द्वारा पथ भ्रष्ट कर रहा होगा। उस को हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम कत्ल करेंगे यह घटना हज़रत महदी के काल ही में घटेगी, हज़रत महदी 7 या 8 या 9 वर्ष खिलाफत कर के वफात पाएंगे अर्थात उन का देहान्त हो जाएगा। उन की जनाजे की नमाज़ हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पढ़ाएंगे और उन के पश्चात हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम खिलाफत संभालेंगे, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के काल ही में याजूज माजूज (एक बड़ी उपद्रवी क़ौम) निकलेंगे उन का कोई मुकाबला न कर सकेगा फिर वह अल्लाह के अजाब से नष्ट कर दिए जाएंगे। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की खिलाफत चालीस वर्षों तक रहेगी वह मदयन के हज़रत शुऐब अलै0 के खान्दान की एक लड़की से निकाह करेंगे उस से उन की औलाद भी होगी। जब उन का देहान्त होगा तो उन को नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कब्र के पास दफन किया जाएगा।

इस लेख की जानकारियां मौलाना मुफ्ती असअद कासमी की पुस्तक "इमाम महदी" और शो–बए –दावत व इरशाद (नदवतुल उलमा) की पुस्तिका "खलीफा महदी" आख़िरुज़्ज़मां के जुहूर और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के नुजूल के सिलसिले में खतिमुल अंबिया की अहादीस संकलित द्वारा हज़रत मौलाना सय्यिद हुसैन अहमद रहमतुल्लाह अलैहि से ली गई हैं।

❖❖

पहरेदारी.....

है कोई मंत्री या अधिकारी जो सादा जीवन बिताता हो और रात को प्रजा का हाल मालूम कर के उसकी सहायता करता हो? है कोई शासक जिसकी पत्नी एक देहाती की पत्नी की बच्चा पैदा होने के कष्ट के समय उसकी सहायता कर सके? क्या ऐसा करना असम्भव है? कदापि नहीं, बस चाहिए तो प्रजा सेवा का जज्बा और जुनून। यह तभी हो सकता है जब मनुष्य अपने पैदा करने वाले को पहचाने और मरने के पश्चात के जीवन में उसके सामने अपने को उत्तरदायी समझे।

❖❖❖

नमाज़ में अल्लाह के..... के बाद तीन बार इस्तेग़फ़ार पढ़ते और कहते:–

"ऐ अल्लाह तू ही सलामती है, और तुझ ही से सलामती है, तू बाबरकत है, ऐ इज़्ज़त और बुजुर्गी वाले।"

और इतनी ही देर क़िबला रुख़ रहते जितनी देर यह कह लें, फिर तेजी से मुकतदियों की तरफ रुख फ़रमा लेते, कभी दायें जानिब कभी बायें, और हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद यह कल्मात पढ़ते:–

"अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं, वह वाहिद है, उसका कोई साझी नहीं, सब कुछ उसी का, सारी तारीफ़ें उसी कीं, और वह हर चीज़ पर क़ादिर है, ऐ अल्लाह जो आप दें उस को कोई रोकने वाला नहीं, और जिस को रोक दें उस को कोई देने वाला नहीं, और आपकी तरफ़ किसी नसीब वाले को उसका नसीब फ़ायदा नहीं पहुंचा सकता"

और कहते:–

"अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह तनहा है उसका कोई शरीक नहीं, उसी की हुकूमत है, और उसी की सब तारीफ़ें, और वह हर चीज़ पर क़ादिर है, खुदा के अलावा किसी के पास न कूव्वत है और न ताक़त है।"

और यह भी कहते:–

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, सिर्फ़ उसीकी इबादत करते हैं, उसी का इनाम व एहसान है, और उसी की अच्छी तारीफ़ें, और खुदा के सिवा कोई माबूद नहीं, हम सिर्फ़ उसी की इबादत करते हैं, दीन को उसके लिए ख़ालिस कर के, चाहे काफ़िरों को कैसा ही बुरा लगे।"

आपने उम्मत के लिए यह मुस्तहब क़रार दिया है कि हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद "सुब्हान अल्लाह" तैंतीस बार, "अल्हम्दुलिल्लाह" तैंतीस बार और "अल्लाहु अकबर" तैंतीस बार कहें और सौ का अदद "लाइलाहा इल्लल्लाह वहदहू ला शरीकल हू लहुल मुल्को वलहुल हमदो वहुवा अला कुल्ले शैइन क़दीर" कह कर पूरा करें और एक दूसरी रिवायत में "अल्लाहु अकबर" का चौंतीस बार कहना भी आया है।

❖❖❖

आमला या आँवला

—राशिदा नूरी

आँवला मशहूर फल है, उन्नाब से लेकर अखरोट के बराबर तक होता है, बड़े आमला को बनारसी आमला कहते हैं जो ज़ियादा तर मुरब्बा डालने के काम आता है।

आमले का मुरब्बा और अचार डालते हैं और इन को खुशक कर के मुख्तलिफ क़िस्म की दवाएं बनाते हैं।

आमला दिल की कमज़ोरी, घबराहट और खोफ़क़ान मालिखोलिया को दूर करने के लिए निहायत मुफ़ीद है, दिमाग़ और बसारत (निगाह) को ताक़त और ज़हन व हाफ़ज़े को बढ़ाता है। मेदा व आंतों की साख़्त को मज़बूत कर के उनको ताक़त देता है। सफरा और खून के जोश को तस्कीन देने, दस्तों को रोकने और प्यास बुझाने के लिए भी दिया जाता है।

जदीद तहक़ीक़ात के मुताबिक़ आमला में हयातीन विटामिन सी संतरे और नारंगी से भी ज़ियादा पाये जाते हैं। इसलिए यह जिस्म की परवरशि के लिए निहायत कार आमद फल है और मर्ज़ सुकरवी में इस का इस्तेमाल खुसूसियत से मुफीद होता है मर्ज़ सुकरवी में मसूढ़े पिलपिले हो जाते हैं और उन से खून बहा करता है। सर्द दवार (चक्कर आना) में आमला, धनया हर एक 10 ग्राम रात को पानी में भिगो रखें, सुबह को पानी मल छान कर मिसरी मिला कर पियें चन्द रोज़ के इस्तेमाल से फाएदा हो जाएगा।

गर्मियों में जब कि प्यास बहुत सताती हो, खून के अन्दर तेज़ी या सफ़रा का ग़ल्बा हो तो खुशक आमला 50 ग्राम ले कर एक कोरी ठेलिया में डाल कर पानी से भर कर रख छोड़ें जब प्यास लगे यही पानी पियें प्यास दूर हो जाएगी गर्मियों में बाज दूध पीते बच्चों को दस्त आने लगते हैं और प्यास बहुत लगती है, उन्हें भी आमलों का पानी पिलाने से आराम हो जाता है।

आमला नकसीर को रोकता है, अगर किसी शख्स की बार बार नकसीर फूटे और किसी तदबीर से बन्द न हो तो ऊपर के तरीक़े से पानी पिलायें और आमलों ही को पानी में पीस कर तालू, पेशानी, और नाक पर लेप करें, नकसीर बन्द हो जाएगी और कौड़ियों की दवा वह काम कर दिखाएगी जो क़ीमती से क़ीमती दवाओं से नहीं हो सकता। नकसीर ही पर क्या मौकूफ है, अगर पेशाब पाख़ाना के रास्ते से खून जारी हो तो 10 ग्राम आमला पीस छान कर मिसरी या शकर मिला कर पिलाने से बन्द हो जाता है।

दस्तों को रोकने और मेदे को कूवत देने के लिए खूशक आमलों को थोड़े पानी में भिगो रखने के बाद पीसें और थोड़ा नमक मिला कर जंगली बेर के बराबर गोलियां बनाएं, एक—एक गोली सुबह शाम खिलाएं।

आमला ज़्याबेतीस को दूर करता है, आमला खुशक और मग़ज़े तुख्म जामुन बराबर वज़न लेकर सफूफ़ बनाएं और ये सफूफ 5–5 ग्राम ताज़ा पानी से खिलाएं। आमला पुराने सुज़ाक को भी अच्छा करता है। आमला खुशक और हल्दी बराबर वज़न ले कर सफूफ़ बनाएं और रोज़ाना सुब्ह को 7 ग्राम नहार मुंह गाय के दूध या पानी से खायें। आमला बालों की जड़ों को मज़बूत करता है और उनको सफेद होने से रोकता है, इस गर्ज़ के लिए आमला को पानी में पीस कर बालों की जड़ों में लगाते हैं, आमला को पानी में भिगो कर उस पानी से बालों को धोते हैं और इसका तेल बना कर बालों में लगाते हैं। रौग़ने आमला (आमले का तेल) हम दर्द का लाभदायक होता है। (देहाती मुआलिज से हिन्दी अनुवाद)

❖❖❖

धर्म की मौलिकता.....

पांचवीं और अंतिम उपासना तीर्थ यात्रा की है जो हज के नाम से विश्व विख्यात है।

हज केवल उन्हीं लोगों पर अनिवार्य है जो धरती केन्द्र मक्का नगर तक आने–जाने में वित्तीय आधार पर पूर्ण सामर्थ हों, उन सामर्थ लोगों के लिए भी यह हज यात्रा जीवन में केवल एक बार ही अनिवार्य है। हज यात्रा के दिनों में मक्का की पवित्र नगरी पहुंच कर परिक्रमा, (तवाफ) उपासना सम्बन्धी जितने भी कार्य किए जाते हैं वह सब के सब हम सब के पूर्वज हज़रत इब्राहीम अलै0 के ईश्वर के प्रति प्रेम और बलिदान की याद में उन की नकल समान हैं।

वर्तमान दुन्या की अधिकांश आबादी हज़रत इब्राहीम अलै0 के मानने वालों की है। मुसलमानों के अतिरिक्त ईसाई और यहूदी जगत तो स्पष्ट रूप से उनके मानने वाले हैं। परन्तु कुछ अन्य कौमें ऐसी भी हैं जो अपना सम्बन्ध हजरत इब्राहीम से भूल चुकी हैं। मगर अनजाने में अपनी अनेक उपासनाओं में उनके द्वारा निर्धारित धर्म विधान का पालन करने का प्रयास करती हैं। जैसे हमारे देशबंधुओं का ब्रह्मण वर्ग।

परिक्रमा करना, बलि देना, सफेद चादर धारण करना, परिक्रमा के समय नंगे पैर रहना या खडाऊँ पहनना, परिक्रमा से पहले स्नान करना, सर मुंडाना इत्यादि। वे कार्य हैं जो इब्राहीम अलै की याद में हज के दौरान किये जाते हैं। शब्द ब्रह्मण में भी हज़रत इब्राहीम के नाम की झलक मौजूद है।

यह हैं वे मूल तथ्य जो मानवता रूपी माला के बिखरे मोतियों को एक दूजे के निकट लाने तथा सहानुभूति और प्रेम भावना को प्रबल करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

❖❖❖

सिपाही का बेटा क़लम का सिपाही

एक समीक्षा

—डॉ0 हैदर अली खाँ

समाज सेवा का महत्व हर समाज और हर वर्ग में महान रहा है इस्लाम में भी समाज सेवा का मक़ाम इबादत का है और अल्लाह से करीब होने का एक महत्वपूर्ण साधन है। अल्लाह ने इसी कार्य के सदक़े में विलायत का मक़ाम अंगिनत लोगों को प्रदान कर दिया और दुन्या व आखिरत दोनों जगहों पर उन्हें सम्मानित किया।

जनाब डॉ0 हैदर अली खां साहब भी बुद्धि जीवी, ज्ञानी, साहित्यकार के साथ–साथ एक महान समाज सेवी हैं। पूर्वांचल के ज़िला गाज़ीपुर में जन्मे डॉ0 साहब ने अपने क्षेत्र "कमसार व बार" के पिछड़ेपन, अज्ञानता और सामाजिक कुरीतियों को दूरे करने में बचपन से ही महत्वपूर्ण योगदान किया जिस का आभास इस उल्लेखित पुस्तक के अध्ययन से होगा।

गरीबी के बावजूद बुलंद हौसले के धनी डॉ0 साहब ने डाक्ट्रेट तक की शिक्षा बड़ी संघर्षपूर्ण जीवन में प्राप्त की और उर्दू में भी दक्षता हासिल कर अपनी क़ौम व मिल्लत की शैक्षणिक, सामाजिक और आर्थिक हर प्रकार से सेवाएवं मार्गदर्शन करने के लिए बलिया की सरज़मीन को अपनी कर्मभूमि बनाई और खूब काम किया और फालिज से प्रभावित होने के बावजूद आज तक अपने देश व समाज की सेवा ज़बान व क़लम से कर रहे हैं।

उक्त पुस्तक डॉ0 साहब की जीवनी है जिसमें जहां एक ओर डॉ0 साहब की शिक्षा परक जीवनी है वहीं उनके अनेक लाभदायक आलेख भी शामिल हैं। इसी प्रकार विभिन्न क्षेत्रों के महानुभावों के आलेख भी इस किताब के महत्व को बढ़ाते हैं। यह किताब हर वर्ग के लोगों विशेषकर नवजवानों के सपनों को पंख लगाने का काम करेगी और बूढ़ों को अवसाद से निकालने में सहायक सिद्ध होगी।

हिन्दी उर्दू की मिश्रित भाषा में देवनागरी लिपि में लिखित यह पुस्तक 296 पृष्ठों की हैं 1000 प्रतियां 2015 ई0 में पहले संस्क्रण के रूप में आई हैं। ज़बान सरल है बेबाकी के कारण कहीं कहीं ऐसी बातें भी आ गई हैं जो नहीं होनी चाहिए। मूल्य बहुत उचित मात्र ₹ 350 रखा गया है। समाज सेवी व साहित्यकार डॉ0 मक़बूल वाजिद साहब (भोपाल) की छत्र छाया में प्रकाशित पुस्तक उन्हीं की अकादमी "शेरी अकादमी" 4–आम वाली मस्जिद रोड, जहांगीराबाद भोपाल एम.पी. 462008 से प्राप्त की जा सकती है। लेखक डॉ0 हैदर अली खां साहब के आवास परमन्दापुर बलिया उ0प्र0 277001 से भी मंगाई जा सकती है।

सम्पर्क सूत्र– 0945110317

❖❖❖

नबी पे रहमत रब से मांगो, खूब पढ़ो तुम उन पे सलाम

—इदारा

सच्चा राही पढ़ो पढ़ाओ, दीन खुदा का तुम फैलाओ
अच्छी बातें लिखो लिखाओ, सच्चा राही को पहुंचाओ
अगला जीवन जन्नत का है, या फिर नारे जहन्नम का
नार से अपने को भी बचाओ, नार से घर वालों को बचाओ
अगर नार से बचना चाहो, सुनो यह सच्ची पक्की बात
रब के नबी के दीन को सीखो, दीन खुदा का तुम अपनाओ
दुन्या में कुछ रहना ही है, दुन्या की भी बातें सीखो
आवश्यक दुन्या भी सीखो, ताकि सुख जीवन में लाओ
ज्ञान और विज्ञान को सीखो, गणित और भुगोल को सीखो
वैध ज्ञान दुन्या के सीखो, जन सेवा को भी अपनाओ
नबी पे रहमत रब से मांगो, खूब पढ़ो तुम उन पे सलाम
रब को अपने राज़ी कर लो ताकि रब से जन्नत पाओ

उर्दू सीखये

—इदारा

हिन्दी जुम्लों की मदद से उर्दू जुम्ले पढ़ये।

अहमद ने रोज़ा रखा, जैनब ने रोज़ा रखा।

احمد نے روزہ رکھا، زینب نے روزہ رکھا۔

अहमद ने नमाज़ पढ़ी, ज़ैनब ने नमाज़ पढ़ी।

احمد نے نماز پڑھی، زینب نے نماز پڑھی۔

यह चारों जुम्ले फेअ्ले मुतअ़द्दी के माज़ी मुतलक़ के हैं।

یہ چاروں جملے فعل متعدی کے ماضی مطلق کے ہیں۔

अहमद ने रोज़ा रखा है, ज़ैनब ने रोज़ा रखा है।

احمد نے روزہ رکھا ہے، زینب نے روزہ رکھا ہے۔

अहमद ने नमाज़ पढ़ी है, ज़ैनब ने नमाज़ पढ़ी है।

احمد نے نماز پڑھی ہے، زینب نے نماز پڑھی ہے۔

यह चारों जुम्ले फेअ्ले मुतअ़द्दी के माज़ी क़रीब के हैं।

یہ چاروں جملے فعل متعدی کے ماضی قریب کے ہیں۔

अहमद ने रोज़ा रखा था, ज़ैनब ने रोज़ा रखा था।

احمد نے روزہ رکھا تھا، زینب نے روزہ رکھا تھا۔

अहमद ने नमाज़ पढ़ी थी, ज़ैनब ने नमाज़ पढ़ी थी।

احمد نے نماز پڑھی تھی، زینب نے نماز پڑھی تھی۔

यह चारों जुम्ले फ़ेअ्ले मुतअ़द्दी के माज़ी बईद के हैं।

یہ چاروں جملے فعل متعدی کے ماضی بعید کے ہیں۔

इन जुम्लों में फेअ्लों की तज़्कीर व तानीस मफऊ़ल के एतिबार से आती है।

ان جملوں میں فعلوں کی تذکیر و تانیث مفعول کے اعتبار سے آتی ہے۔

इन फेअ्लों के फाइलों के साथ "ने" लाते हैं।

ان فعلوں کے فاعلوں کے ساتھ ''نے'' لاتے ہیں۔